# सच्चा धर्म क्या है?

लेखक

अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ अल्-ईदान

अनुवादकः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

संशोधनः जलालुद्दीन एवं सद्दीक़ अहमद

# ما هو الدين الحق؟

(باللغة الهندية)

تأليف: عبدالله بن عبدالعزيز العيدان

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

مراجعة: جلال الدين وصديق أحمد


المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة

هاتف: ٩٦٦١١٤٤٥٤٩٠٠+ فاكس: ٩٦٦١١٤٩٧٠١٢٦+ ص ب: ٢٩٤٦٥ الرياض: ١١٤٥٧

ISLAMIC PROPAGATION OFFICE IN RABWAH

P.O.BOX 29465 RIYADH 11457 TEL: +966 11 4454900 FAX: +966 11 4970126

# वषय सूची

# सं क्षप्त परिच

इस पुस्क में धर्म का अर्थ और उसके प्रकार, मानव को धर्म की आवश्यकता, इस्लामी अक़ीदे की वशेषताएं, जीवन के तमाम पहलुओं में इस्लाम की सत्यता, इस्लाम में क़ानून साज़ी के स्रोत और इस्लाम के स्तम्भों का उल्लेख है। यह पुस्तक सच्चे धर्म के अभलोषी के लए मार्गदर्शक है।

बिस्मिल्लाहिर्-रह़्मानिर्-रह़ीम

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ, जो अति मेहरबान और दयालु है।

# प्रस्तावना

प्रत्येक धर्म अथवा दर्शन के कुछ सध्दांत होते हैं, जो उसे नियंत्रित करते हैं, कुछ कार्य-प्रणालयाँ और वधयाँ होती हैं, जिनपर वह चलता है तथा कुछ मूल्य होते हैं, जिनकी वह पाबन्दी करता है। इस दृष्टिकोण से हम हर उस व्यक्ति के लए, जो मौलक रूप से मुसलमान है, अगले पन्नों में उसके धर्म की संक्षप्त रूप-रेखा प्रस्तुत करेंगे, ताक उसका इस्लाम और उसकी इबादत (उपासना) केवल दूसरों की तक़्लीद और अनुसरण की बजाय ज्ञान और जानकारी पर आधारित हो। कन्तु, जो व्यक्ति पहले से मुसलमान नहीं है, हम उसके लए भी सच्चे धर्म अर्थात इस्लाम का संक्षप्त परिचय प्रस्तुत करेंगे, ताक उसे इस धर्म के उन मूल्यों तथा कार्य-प्रणालयों, आचरणों और आदेशों पर चन्तन-मनन का उचत अवसर प्राप्त

हो सके, जिनके कारण यह धर्म अन्य धर्मों से श्रेष्ठ है; ताक यह जानकारी और चंतन उसे अगले क़दम की ओर -इस धर्म से आकर्षत होने और इससे संतुष्ट होने की ओर- ले जाय। इसलए क यह ईश्वरीय धर्म है। मानव जाति का बनाया हुआ धर्म नहीं। यह अपने समस्त पक्षों और शक्षाओं में सम्पूर्ण है, जैसा क आने वाली पंक्तियों में पढ़ा जाएगा। हो सकता है यह चीज़ें उसे शीघ्र ही दृढ़ वश्वास, सम्पूर्ण संतुष्टि और पूरी सहमति के साथ इस धर्म में प्रवेश करने के बारे में सोच-वचार करने का आमंत्रण दें। क्योंक वह इस धर्म में प्रवेश करने पर, -निश्चित रूप से- वास्तवक सौभाग्य, हार्दिक संतोष, सुख-चैन और हर्ष एवं आनन्द का अनुभव करेगा और उस समय वह आयु के हर उस दिन, घन्टा और मनट पर शोक तथा दुख प्रकट करेगा, जो उसने इस महान धर्म से अलग रहकर बिताया है!

इस प्रस्तावना में हम, हर सच्चे धर्म के अभलाषी को एक महत्वपूर्ण बात से सावधान करना आवश्यक समझते हैं। वह यह है क आपको अन्य

धर्मों के मानने वालों की तरह, ख़ुद मुसलमानों का दुष्ट आचरण, उनमें फैली हुई बुराइयाँ, धोखाधड़ी अथवा अत्याचार आदि, इस धर्म से परिचत होने, इससे एक ईश्वरीय धर्म के रूप में आश्वस्त होने और स्वीकार करने में रुकावट न बनने पायें। क्यों यह दुष्ट आचरण के मालक मुसलमान वास्तवक इस्लाम के प्रतिनिध नहीं हैं। यह केवस अपने प्रतिनिध हैं। इस्लाम को इनके दुष्ट कर्मों से कोई लेना-देना नहीं है। इनके इन कर्मों को न अल्लाह तआला पसन्द करता है, न उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पसन्द करते हैं।

अतः हम आपको इन संक्षप्त पन्नों के पढ़ने का आमन्त्रण देते हैं; ताक आप स्वयं इस धर्म की वास्तवक शक्षाओं और इसके बारे में इसके मानने वालों की बातों की सत्यता का निर्णय कर सकें। हमें वश्वास है क आप इस पुस्तक के अन्दर ऐसी ज्ञानमय बातें, मूल्य और वचार पायेंगे, जिनसे आपको प्रसन्नता होगी, जिनकी आप तलाश में थे और अब आपके हाथ लग गयीं हैं। ये इसलए क अल्लाह तआला आपसे प्रेम

करता है, लोक-परलोक में आपके लए भलाई, कृपा एवं आपका कल्याण चाहता है। इसलए हमें आशा है क आप इसे शुरू से अन्त तक पढ़ेंगे और जिस सच्चाई की ओर यह बुला रही है, उसे स्वीकार करने में जल्दी करेंगे। क्योंक सच्चाई इस बात के अधक योग्य है क उसकी पैरवी की जाय। आप नफ़्से अम्मारा (बुराई पर उभारने वाली अत्मा), अपने शत्रु शैतान, बुरे साथयों अथवा पूजा के अयोग्य पूज्यों की पूजा करने वाले अपने परिवार के लोगों को इस बात की अनुमति न दें क वह आपको हिदायत के प्रकाश, इस संसार में सौभाग्य और जीवन के परम सुख से रोक दें, जो आपको इस धर्म में प्रवेश करने के बाद प्राप्त होगा। इसलए क वह आपको इससे रोककर आपको जीवन की सबसे महान और मूल्यवान वस्तु से लाभान्वित होने से वंचत कर देंगे। दर असल वह महान और बहुमूल्य वस्तु है मरने के पश्चात स्वर्ग प्राप्त होना।.....तो फर क्या आप इस आमंत्रण को स्वीकार करेंगे.....? अत्यंत

बहुमूल्य उपहार जो हम आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं....। हमें आपसे यही आशा है।

अब धीरे-धीरे इस संक्षप्त परिचय के पन्नों को पलटते हैं।

# धर्म का अर्थ

जब हम धर्म को इस पहलु (दृष्टि) से देखते हैं क वह धर्मनिष्ठा के अर्थ में एक मानसक अवस्था है, तो उसका तात्पर्य यह होता है कः

एक अदृश्य परम अस्तित्व पर वश्वास रखना, जो मानव संबंधत कार्यों का उपाय, व्यवस्था और संचालन करता है। ऐसा वश्वास, जो उस परम और दिव्य अस्तित्व की ओर रूच और उससे भय के साथ, वनयपूर्वक तथा उसकी प्रतिष्ठा एवं महानता का गुणगान करते हुए उसकी आराधना करने पर उभारती है।

और संक्षप्त में यह कह सकते हैं कः

एक अनुसरण और पूजा के योग्य ईश्वरीय अस्तित्व पर वश्वास रखना।

कन्तु जब हम उसे इस पहलु (दृष्टि) से देखते हैं क वह एक बाहरी वास्तवकता है, तो हम उसकी परिभाषा इस प्रकार करेंगे क वहः

वह तमाम काल्पनिक सध्दांत, जो उस ईश्वरीय शक्ति के गुणों को निर्धारित करते हैं और वह तमाम व्यवहारिक नियम, जो उसकी उपासना की व धयों की रूप-रेखा तैयार करते हैं।

## धर्मों के प्रकारः

अध्ययन कर्ता इस बात से परिचत हैं क धर्म के दो प्रकार हैं:

## आसमानी या पुस्तक सम्बन्धी धर्मः

अर्थात जिस धर्म की कोई धर्मपुस्तक हो, जो आकाश से अवतरित हुई हो, जिसमें मानव जाति के लए अल्लाह तआला का मार्गदर्शन हो। उदाहरण स्वरूप यहूदियत जिसमें अल्लाह तआला ने अपनी पुस्तक तौरात को अपने संदेशवाहक मूसा अलैहिस्सलात वस्सलाम पर अवतरित कया।

और जैसा क ईसाइयत (Christianity) है, जिसमें अल्लाह तआला ने अपनी पुस्तक इन्जील को

अपने संदेशवाहक ईसा अलैहिस्सलात वस्सलाम पर अवतरित कया।

और जैसा क इस्लाम है, जिसमें अल्लाह तआला ने क़ुर्आन को अपने अन्तिम संदेश्वाहक और दूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित कया।

इस्लाम और अन्य कताबी (पुस्तक सम्बन्धी, आसमानी) धर्मों के मध्य अन्तर यह है क अल्लाह तआला ने इस्लाम के मूल सध्दान्तों और उसके स्रोतों की सुरक्षा की है, क्योंक यह मानव जाति के लए अन्तिम धर्म है। इसीलए यह हेर-फेर और परिवर्तन से ग्रस्त नहीं हुआ है। जबक दूसरे धर्मों के स्रोत और उनकी पवत्र पुस्तिकाएं नष्ट हो गयीं और उनमें हेर-फेर, परिवर्तन और संशोधन कर दिये गये।

## मूर्तिपूजन और लौ कक धर्मः

जिसका सम्बन्ध आकाश की बजाय धरती से हो तथा अल्लाह की बजाय मनुष्य से हो। जैसे बुध्द

मत, हिन्दू मत, कन्फूशयस, ज़रतुश्ती और इनके अतिरिक्त संसार के अन्य धर्म।

यहाँ पर स्वतः एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठ खड़ा होता है। वह यह है क क्या एक बुध्दिमान प्राणी वर्ग, मनुष्य जाति को यह शोभा देता है क वह अपने ही समान कसी प्राणी वर्ग को पूज्य मानकर उसकी उपासना करे? चाहे वह कोई मनुष्य हो या पत्थर, गाय हो या अन्य वस्तु! और क्या उसका जीवन सफल, उसके कार्य व्यवस्थित और उसकी समस्याएं हल हो सकती हैं, जब क वह ऐसी व्यवस्था और शास्त्र का अनुकरण करने वाला है, जिसे पूर्णतः मनुष्य ने बनाया है।

## क्या मनुष्य को धर्म की आवश्यकता है?

मनुष्य के लए सामान्य रूप से धर्म की और वशेष रूप से इस्लाम की आवश्यकता, कोई द्वतीयक आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह एक मौलक और बुनियादी आवश्यकता है, जिसका

सम्बन्ध जीवन के सार, ज़िन्दगी के रहस्य और मनुष्य की अथाह गहराइयों से है।

अति सम्भावत संक्षेप में -जो समझने में बाधक न हो- हम मनुष्य के जीवन में धर्म की आवश्यकता के कारणों का वर्णन कर रहे हैं:

## संसार के महान तथ्यों को जानने के लए अक़्ल (बुध्दि) को धर्म की आवश्यकताः

मनुष्य को धार्मक आस्था (वश्वास) की आवश्यकता -सर्वप्रथम- उसे अपने आपको जानने और अपने आस-पास के महान अस्तित्व (जगत) को जानने की आवश्यकता से उत्पन्न होती है। अर्थात उन प्रश्नों का उत्तर जानने की आवश्यकता, जिनमें मानव शास्त्र (वज्ञान) व्यस्त है, कन्तु उनके वषय में कोई संतोषजनक उत्तर जुटाने में असमर्थ है।

जबसे मनुष्य की सृष्टि हुई है, कई ऐसे प्रश्न उसके मन-मस्तिष्क में उभरते रहे हैं, जिनका उत्तर देने की आवश्यकता है। जैसे, वह कहाँ से आया है?

(आरम्भ क्या है?) उसे कहाँ जाना है? (अन्त क्या है?) और क्यों आया है? (उसके वजूद का उद्देश्य क्या है?) जीवन की आवश्यकताएं और समस्याएं उसे यह प्रश्न करने से कतना ही बाज़ रखें, कन्तु वह एक दिन अवश्य उठ खड़ा होता है, ताक वह अपने आपसे इन अनन्त प्रश्नों के बारे में पूछेः

**(क)** मनुष्य अपने दिल में सोचता है क मैं और मेरी चारों ओर यह वशाल जगत कहाँ से उत्पन्न हुआ है? क्या मैं स्वतः पैदा हो गया हूँ या कोई जन्मदाता है, जिसने मुझे जन्म दिया है? मेरा उससे क्या सम्बन्ध है? इसी प्रकार यह वशाल संसार अपनी धरती और आकाश, जानवर और वनस्पति, खनिज पदार्थ और खगोल समेत क्या स्वतः वजूद में आ गया है या उसे कसी प्रबन्ध कुशल सृष्टा ने वजूद बख़्शा है?

(ख) फर इस जीवन तथा मृत्यु के पश्चात क्या होगा? इस धरती पर इस संक्षप्त यात्रा के पश्चात कहाँ जाना है? क्या जीवन की कथा केवल यही है क माँ जनती है और धरती निगलती है और उसके बाद कुछ नहीं है? ऐसे सदाचारी और पवत्र लोग, जिन्होंने सत्य और भलाई के मार्ग में अपनी जानों को न्योछावर कर दिया तथा ऐसे गुनहगार और पापी, जिन्होंने शह्वत, लालसा और नफ्सानी ख़्वाहिश के मार्ग में दूसरों की बल चढ़ा दी, क्या दोनों का अन्त समान और बराबर हो सकता है? क्या जीवन बिना कसी बदले और प्रतिफल के यूं ही मृत्यु पर समाप्त हो जायेगा या मरने के पश्चात एक अन्य जीवन भी है, जिसमें दुष्कर्मयों को उनके कर्म का बदला दिया जाएगा और सत्कर्म करने वालों को अच्छा प्रतिफल मलेगा?

(ग) फर यह प्रश्न उठता है क मनुष्य की उत्पत्ति क्यों हुई है? उसे बुध्दि और सोचने-समझने की शक्ति क्यों प्रदान की गयी है और वह समस्त जानदारों से श्रेष्ठ क्यों है? आकाश और धरती की समस्त चीज़ें उसके अधीन क्यों कर दी गयी हैं? क्या उसके जन्म लेने का कोई उद्देश्य है? क्या उसके जीवन काल में उसका कोई कर्तव्य है? या वह केवल इसलए पैदा कया गया है क जानवरों के समान खाये-पये, फर चौपायों के समान मर जाए? यदि उसके वजूद का कोई उद्देश्य और मक़्सद है, तो वह क्या है? और वह उसे कैसे पहचानेगा?

ये वो प्रश्न हैं, जो हर युग में मनुष्य से अनुग्रहपूर्वक ऐसे उत्तर का तक़ाज़ा करते रहे हैं, जो प्यास को बुझा सके और हृदय को संतुष्टि प्रदान कर सके। कन्तु संतोषजनक उत्तर प्राप्त करने का एक ही मार्ग है। वह है, धर्म का आश्रय लेना और उसकी ओर पलटना। धर्म मनुष्य को -

सर्वप्रथम- इस बात से अवगत कराता है क वह न तो सहसा अस्तित्व में आ गया है और न इस जगत में स्वंय स्थापत हो गया है। बल्कि वह एक महान सृष्टा की एक सृष्टि है। वही उसका पालनहार है, जिसने उसकी उत्पत्ति की, फर उसे ठीक-ठाक कया, फर उसे शुध्द और उचत बनाया, फर उसमें रूह़ फूँकी (जान डाला), उसके कान, आँख और दिल बनाए और उसे उसी समय से अपनी बेशुमार अनुकम्पाएं प्रदान कीं, जब वह अपनी माँ के पेट में गर्भस्थ था। (अल्लाह तआला का फ़रमान हैः)

﴿أَلَمْ نَخْلُقكُّم مِّن مَّآءٍ مَّهِينٍ ۝٢٠ فَجَعَلْنَٰهُ فِى قَرَارٍ مَّكِينٍ ۝٢١ إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝٢٢ فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ ٱلْقَٰدِرُونَ﴾ [1]

“क्या हमने तुम्हें एक ह़क़ीर (तुच्छ) पानी (वीर्य) से पैदा नहीं कया, फर हमने उसे सुर क्षत स्थान में रखा, एक निर्धारित समय तक, फर हमने अनुमान लगाया और हम कतना उचत (अच्छा) अनुमान लगाने वाले हैं!”

---

[1] सूरह अल्-मुर्सलातः 20-23

और धर्म ही मनुष्य को इस बात से अवगत कराता है क वह जीवन और मरण के पश्चात कहाँ जाएगा? धर्म ही उसे यह जानकारी देता है क मौत केवल वनाश और अनस्तित्व नहीं है, बल्कि वह एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव की ओर...... बर्ज़ख़ी जीवन की ओर स्थानांतरित होना है। उसके पश्चात दूसरा जीवन है, जिसमें हर प्राणी को उसके कर्मों का पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा और जो कुछ उसने कर्म कया है, उसमें वह सदैव रहेगा। सो वहाँ कसी नेकी करने वाले की नेकी, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, नष्ट नहीं होगा। ईश्वर (अल्लाह) के न्याय से कोई अत्याचारी, क्रूर, अहंकारी और अभमानी जान नहीं छुड़ा सकता है।

धर्म ही मनुष्य को यह ज्ञान प्रदान करता है क वह कस उद्देश्य के लए पैदा कया गया है? उसे आदर एवं सम्मान और प्रतिष्ठा एवं सत्कार क्यों प्रदान कया गया है? उसे उसकी ज़िन्दगी के मक़सद तथा उसके दायित्व और कर्तव्य से परिचत कराता है क उसे निरर्थक और बेकार नहीं पैदा कया गया है और न ही उसे व्यर्थ छोड़

दिया गया है। उसकी उत्पत्ति इसलए हुई है, ताक वह धरती पर अल्लाह तआला का प्रतिनिध और उत्तराधकारी बन जाय, उसे अल्लाह के आदेश के अनुसार आबाद करे, उसे अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लए काम में लाये, उसके भीतर पायी जाने वाली चीज़ों की खोज और आवष्कार करे और बिना दूसरों के अधकार पर अत्याचार कये और अपने रब (पालनहार) के अधकार को भूले, उसकी पवत्र चीज़ों को खाये-पये। उसके ऊपर उसके रब (पालनहार) का सर्वप्रथम अधकार यह है क वह अकेले उसी की इबादत (उपासना) करे, उसके साथ कसी को साझी न ठहराए और यह क उसकी इबादत उसी प्रकार करे, जैसे अल्लाह तआला ने अपने उन संदेशवाहकों (रसूलों) के द्वारा सखाया है, जिन्हें उसने मार्गदर्शक और शक्षक, शुभसूचक और डराने वाला बनाकर भेजा है। कन्तु वर्तमान समय में अन्तिम नबी (ईश्दूत) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करे, जब वह इस परीक्षाओं और धार्मक

कर्तव्यों (बन्धनों) से घिरे हुए संसार में अपने दायित्व का निर्वहण कर लेगा, तो उसका प्रतिफल और बदला परलोक में पायेगा। अल्लाह तआला का कथन हैः

﴿يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا﴾[2]

“(उस दिन को याद करो) जिस दिन हर प्राणी, जो कुछ उसने सत्कर्म  कया है, उसे अपने समक्ष उपस्थित पायेगा।”

इससे मनुष्य को अपने वजूद का बोध हो जाता है और जीवन में अपने दायित्वों और कर्तव्यों का स्पष्ट रूप से पता चलता है, जिसे उसके लए सृष्टि के रचयिता, जीवन दाता और मनुष्य के सृष्टा ने स्पष्ट कर दिया है।

जो व्यक्ति बिना धर्म -अल्लाह और परलोक के दिन पर वश्वास रखे- जीवन यापन करता है, वह वास्तव में अभागा और वंचत व्यक्ति है। वह स्वंय अपनी निगाह में एक पाशव (जानवर जैसा) प्रणी

---

[2] सूरह आले-इम्रानः 30

है और वह कसी भी प्रकार से उन बड़े-बड़े जानवरों से भन्न नहीं है, जो उसकी चारों ओर धरती पर चलते-फरते हैं....... जो खाते-पीते एवं (सांसारिक) लाभ उठाते हैं और फर मर जाते हैं। उन्हें न अपने कसी उद्देश्य का पता होता है और न वह अपने जीवन का कोई रहस्य जानते हैं। निःसंदेह वह एक छोटा और साधारण सृष्टि है, जिसका कोई भार और मूल्य नहीं है। वह पैदा तो हो गया, कन्तु उसे यह पता नहीं है क वह कैसे पैदा हुआ है और उसे कसने पैदा कया है। वह जीवन-यापन कर रहा है, कन्तु उसे यह ज्ञान नहीं है क वह क्यों जी रहा है? वह मरता है, कन्तु उसे यह पता नहीं है क वह क्यों मरता है? और मरने के पश्चात क्या होगा? वह अपनी तमाम चीज़ों, मरने और जीने, प्रारम्भ और अन्त के वषय में संदेह बल्कि अंधेपन का शकार है।

उस मनुष्य का जीवन कतना दयनीय है, जो सर्ववशेष और प्रमुख चीज़ अर्थात अपने नफ़्स की वास्तवकता, अपने अस्तित्व के रहस्य और अपने जीवन के उद्देश्य के सम्बन्ध में संदेह और

वस्मय के जहन्नम या अन्धेपन और मूर्खता के घटाटोप अन्धेरों में जी रहा हो। वस्तुतः वह अभागा और दुखी मनुष्य है, यद्यप वह सोने और रेशम में डूबा हुआ और आनन्द और सुख के उपकरणों से घिरा हुआ हो, सर्वोच्च उपाधपत्रें रखता हो और ऊँची-ऊँची डग्रयाँ (उपाधयाँ) प्राप्त कया हुआ हो!

## मानव-प्रकृति को धर्म की आवश्यकताः

इसी प्रकार भावना और चेतना को भी धर्म की आवश्यकता होती है। क्योंक मनुष्य इलेक्ट्रॉनिक मस्तिष्क के समान केवल बुध्दि का नाम नहीं है। बल्कि वह बुध्दि, भावना व चेतना और आत्मा का नाम है। इसी प्रकार उसकी प्रकृति की रचना हुई है और यही उसके प्रकृति की आवाज़ है। मनुष्य की यह प्रकृति है क कोई ज्ञान और सभ्यता उसे सन्तुष्ट नहीं कर सकती, कोई कला और साहित्य उसकी आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं कर सकता, और न कोई श्रृंगार और धन-पूंजी उसके शून्य-हृदय की पूर्ति कर सकती है। बल्कि उसका

दिल बेचैन, उसकी आत्मा भूखी और उसकी प्रकृती प्यासी रहती है और उसे रिक्तता और अभाव का गम्भीर अहसास रहता है। यहाँ तक क जब वह अल्लाह पर आस्था और वश्वास की दौलत प्राप्त कर लेता है, तो व्याकुलता के बाद शान्ति मलती है, भय के बाद सुरक्षा का अनुभव होता है और उसके अन्दर यह अहसास जन्म लेता है क उसने अपने आपको पा लया है।

हमारे पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैः

((مَا مِنْ مَوْلُوْدٍ إِلَّا وَ يُوْلَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ، فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ، أَوْ يُنَصِّرَانِهِ، أَوْ يُمَجِّسَانِهِ))

“हर (पैदा होने वाला) शशु फ़तरत (इस्लाम की दशा) पर जन्म लेता है। फर उसके माता-पता उसे यहूदी बना देते हैं, ईसाई बना देते हैं या मजूसी बना देते हैं।”

इस ह़दीस के अन्दर इस बात पर अधक बल दिया गया है क मनुष्य की मूल प्रकृति यह होती है वह अपने रब (पालनकर्ता) के समक्ष समर्पत

और सच्चे धर्म को स्वीकार करने के लए तैयार होता है और इस फ़तरत से वमुख होकर बातिल (मथ्या, असत्य) धर्मों की ओर अपने आस-पास की परिस्थितियों के कारण ही मुख करता है। चाहे इसका कारण माता-पता हों, शक्षक हों, परिवेश हो या इनके अतिरिक्त अन्य कोई चीज़।

फ़लास्फ़र (दार्शनिक) “अगोस्त सयातियह” अपनी पुस्तक “धर्म-शास्त्र” में लखता हैः

“मैं धर्म निष्ठ क्यों हूँ? मैं इस प्रश्न के साथ अपने ओठ को एक बार भी हिलाता हूँ, तो अपने आपको इस प्रश्न का यह उत्तर देने पर ववश पाता हूँ क मैं धर्म निष्ठ हूँ, इसलए क मैं इसके वरुध्द की शक्ति नहीं रखता, इसलए क धर्म निष्ठ होना मेरे अस्तित्व की आवश्यकताओं में से एक आध्यात्मिक आवश्यकता है। लोग मुझसे कहते हैं क यह पुश्तैनी गुणों, प्रशक्षण, अथवा स्वभाव का प्रभाव है। मैं उनसे कहता हूँ: मैंने बहुधा ठीक इन्हीं आपत्तियों के द्वारा अपने नफ़्स पर आपत्ति वयक्त की है। कन्तु मैंने पाया है क यह समस्या

को दबा देता है और उसकी कोई व्याख्या नहीं कर पाता।”

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है क हमें यह आस्था और धारणा हर जातियों में; चाहे वह प्राचीन असभ्य जातियाँ हों या सभ्य, हर महाद्वीप में; चाहे वह पूर्वी महाद्वीप हो या पश्चिमी और हर युग में; चाहे वह प्राचीन युग हो या वर्तमान युग, दिखाई देता है। यह और बात है क अधकांश लोग सीधे मार्ग से भटक गये।

यूनानी इतिहासकार “ब्लूतार्क” **(BLUTARCH)** का कहना हैः

मैंने इतिहास में बिना क़लों के नगरों को, बिना महलों के नगरों को, बिना पाठशालाओं के नगरों को तो पाया है, कन्तु बिना पूजास्थलों और इबादतगाहों के नगर कभी नहीं पाये गए।

## मनुष्य के मान सक स्वस्थ और आत्मिक शक्ति को धर्म की आवश्यकताः

धर्म की एक अन्य आवश्यकता भी है। एक ऐसी आवश्यकता, जिसका तक़ाज़ा मनुष्य का जीवन और उसके अन्दर उसकी आकांक्षाएं तथा आशाएं और उसकी पीड़ाएं और यातनाएं करती हैं..... मनुष्य की एक ऐसे शक्तिमान स्तम्भ की आवश्यकता, जिसकी ओर वह शरण ले सके, एक सशक्त आधार और सहारे की आवश्यकता, जिसपर वह भरोसा कर सके। जिस समय वह कठिनाइयों से ग्रस्त हो, जब उसके यहाँ दुर्घटनाएं घटें, जब वह अपनी प्रय चीज़ से हाथ धो बैठे, अप्रय चीज़ का सामना करे या उसपर ऐसी चीज़ टूट पड़े, जिसका उसे भय या डर हो, ऐसी परिस्थिति में धार्मक आस्था अपना कर्दार निभाती है। चुनांचे यह उसे कमज़ोरी के समय शक्ति, निराशा की घड़यों में आशा, भय के छणों में उम्मीद और कठिनाईयों, कष्टों तथा संकट के समय धैर्य प्रदान करती है।

अल्लाह तआला, उसके न्याय और कृपा में आस्था तथा क़यामत के दिन उसके समक्ष प्रस्तुत कये जाने और उसके सदैव बाक़ी रहने वाले घर, जन्नत की प्राप्ति पर वश्वास, मनुष्य को मानसक स्वस्थ और अध्यात्मिक शक्ति प्रदान करता है। फर तो उसके अस्तित्व से हर्ष एवं आनन्द की करण फूट पड़ती है, उसकी आत्मा आशा से परिपूर्ण हो जाती है, उसकी आँखों में संसार का क्षेत्र वस्तृत हो जाता है, वह जीवन को उज्जवल दृष्टि से देखने लगता है और अपने संक्षप्त अस्थायी जीवन में, जो कष्ट सहता और जिन चीज़ों का सामना करता है, वह सब उसपर सरल हो जाता है। उसे ऐसे ढारस, आशा और शान्ति का अनुभव होता है, जिसका स्थान न कोई ज्ञान और दर्शन ग्रहण कर सकता है, न कोई धन-पूंजी और न सन्तान तथा पूरब और पश्चिम का शासन।

कन्तु, वह व्यक्ति, जो अपने संसार में बिना कसी ऐसे धर्म और वश्वास के जीता है, जिससे वह अपनी तमाम समस्याओं में निर्देश प्राप्त कर सके; उससे कसी चीज़ के बारे में धार्मक आदेश ज्ञात

करे, तो वह उसका आदेश बतलाए, उससे प्रश्न करे तो उसका उत्तर दे और उससे सहायता मांगे तो उसकी सहायता करे। उसे ऐसी सहायता और सहयोग प्रदान करे जो परास्त न हो और निरन्तर रहे। जो व्यक्ति, इस वश्वास और आस्था से परे जीवन व्यतीत करता है, वह इस अवस्था में जीता है क उसका हृदय बेचैन होता है, उसकी सोच भ्रमत होती है, उसकी अभरूच परागन्दा होती है और उसका अस्तित्व भंग और टुकड़े-टुकड़े होता है। कुछ नीति शास्त्रों ने ऐसे व्यक्ति को उस अभागा के समान ठहराया है, जिसके बारे में बयान कया जाता है क उसने बादशाह की हत्या कर दी और उसका दण्ड यह निर्धारित कया गया क उसके दोनों हाथों और दोनों पावों को चार घोड़ों में बांध दिया जाय। फर उनमें से प्रत्येक की पीठ पर लाठियाँ बरसायी गयीं, ताक उनमें से हर एक चारों दिशाओं में से अलग-अलग दिशाओं में तेज़ी से भागे। यहां तक क उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गये!

यह घृणत शारीरिक तौर पर टुकड़े-टुकड़े होना, उस मानसक रूप से भंग होने के समान है, जिससे धर्म के बिना जीने वाला व्यक्ति पीड़त होता है। और शायद होशमंदों के नज़दीक दूसरी ह़ालत पहली हालत से अधक कष्टदायक, दयनीय और घातक है। क्योंक इस भंग का प्रभाव कुछ पलों और क्षणों में समाप्त नहीं होता, बल्कि यह एक यातना है, जिसकी अवध लम्बी होती है। यह पीड़त व्यक्ति का साथ जीवन भर नहीं छोड़ती।

अतः हम देखते हैं क वह लोग, जो बिना सुदृढ़ वश्वास और आस्था (अक़ीदा) के जीवन बिताते हैं, वह दूसरे लोगों से अधक मानसक बेचैनी, जिस्मानी तनाव, दिमाग़ी उलझन एवं व्याकुलता के शकार होते हैं। जब उन्हें जीवन के दुर्भाग्यों और संकटों का सामना होता है, तो वह अति शीघ्र टूट जाते हैं। फर या तो जल्द ही आत्महत्या कर लेते हैं या मानसक रोगी बनकर मृतकों के समान जीवन व्यतीत करते हैं! जैसा क प्राचीन अरबी कव ने इसको रेखांकत कया हैः

“वह व्यक्ति, जो मरकर वश्राम पा जाय, वह मुर्दा नहीं है। वास्तव में, मुर्दा वह है, जो जीवत रहकर भी मुर्दा हो। मुर्दा तो वह व्यक्ति है, जो दुखी, शोक-ग्रस्त, मृत-हृदय और निराश होकर जीवन बिताता है।”

इसी बात को वर्तमान काल में मानसशास्त्रियों और मानसक रोगों की चकत्सा करने वालों ने सध्द कया है और इसी बात को सर्वसंसार में वचारकों और समालोचकों ने प्रमाणत कया है।

डॉक्टर कार्ल पांज अपनी पुस्तक “वर्तमान युग का मनुष्य अपने नफ़्स की तलाश में हैं” में कहता हैः

“ पछले तीस वर्षों के दौरान पूरी दुनिया के जिन रो गयों ने भी मुझसे प्रामर्श लया है, उनसब की बीमारी का कारण, उनके वश्वास का अभाव और अक़ीदे का अदृढ़ एवं डांवा-डोल होना था। उन्हें स्वास्थ उसी समय प्राप्त हुआ, जब उन्होंने अपने ईमान को पुनः स्था पत और पुनर्जी वत कर लया।”

लाभ एवं संसाधन शास्त्र वज्ञानी “ व लयम जेम्स” का कहना हैः

“निःसंदेह, चन्ता और शोक का सबसे महान उपचार ईमान और वश्वास है।”

डॉक्टर “बिरियल” का कथन हैः

“निःसंदेह, वास्त वक रूप से धर्मनिष्ठ व्यक्ति कभी भी मान सक बीमारियों से ग्रस्त नहीं होता।”

तथा डॉक्टर “डील कारनीजी” अपनी पुस्तक “ चन्ता छोड़ो और जीवन का आरम्भ करो” में कहते हैं:

“मानसशास्त्र वज्ञानी जानते हैं क दृढ़ वश्वास और धर्म निष्ठता, यह दोनों; शोक, चन्ता, मान सक तनाव को समाप्त कर देने और इन बीमारियों से स्वास्थ प्रदान करने के ज़ा मन हैं।”

## समाज में प्रेरणोओं, आचरण के नियमों तथा व्यवहार संहिता के लए धर्म की आवश्यक्ताः

धर्म की अन्य आवश्यकता भी है। वह है सामाजिक आवश्यकता। समाज को प्रेरकों और नियमों की आवश्यकता है। अर्थात ऐसे प्रेरक जो समाज के हर व्यक्ति को भलाई का काम करने और कर्तव्य का पालन करने पर उभारें, यद्यप कोई उनकी निगरानी (निरीक्षण) करने वाला या बदला देने वाला मौजूद न हो......। और ऐसे ज़ाब्ते और संहिताएं, जो सम्बन्धों और सम्पर्कों को नियंत्रित करें। हर एक को इस बात पर बाध्य करें क वह अपनी सीमा से आगे न बढ़े, अपनी इच्छाओं या शीघ्र प्राप्त होने वाले भौतिक लाभ के कारण दूसरे के अधकार पर आक्रमण न करे अथवा समाज के कल्याण एवं हित में लापरवाही से काम न ले।

यह नहीं कहा कजा सकता क नियम और वधेयक इन ज़ाब्तों और संहिताओं और प्रेरकों को

पैदा करने के लए प्रयाप्त हैं। क्योंक नियम कसी प्रेरक और प्रोत्साहन को जन्म नहीं दे सकते। इसलए क उनसे छुटकारा पाना सम्भव है। उनके साथ चालबाज़ी करना और बहाना बनाना सरल है। इसलए ऐसे प्रेरकों, व्यवहार संहिता तथा आचरण के ज़ाब्तों का होना आवश्यक है, जो मनुष्य के हृदय के भीतर से काम करते हों। उसके बाहर से नहीं। इस आन्तरिक प्रेरक का होना आवश्यक है। “अन्तरात्मा”, “भावना” या “हृदय” का होना आवश्यक है -आप उसको कुछ भी नाम दे दें।- यही वह शक्ति है, जो जब शुध्द होती है, तो मनुष्य का पूरा कर्म शुध्द होता है और जब वह दूषत हो जाती है, तो सारा कर्म दूषत हो जाता है।

लोगों का मुशाहिदा, अनुभव और साहित्य के पढ़ने से यह सध्द हो चुका है क अन्तरात्मा के प्रशक्षण, आचरण शुध्दि, भलाई पर उभारने वाले प्रेरकों और बुराई से रोकने वाली संहिताओं की को वजूद में लाने के लए धार्मक वश्वास से बढ़कर कोई वस्तु नहीं है। यहाँ तक क ब्रिटेन के कुछ

वर्तमान जज -जिन्हें वज्ञान की उन्नति, सभ्यता के वस्तार और नियमों की शुध्दता और यथार्थवाद के बावजूद, भयानक अपराध ने भयभीत कर दिया -कह पड़ेः

“आचरण और व्यवहार के बिना कोई संवधान और क़ानून नहीं पाया जा सकता तथा ईमान और वश्वास बिना कोई आचरण परवान नहीं चढ़ सकता।”

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है क स्वयं कुछ नास्तिकों और अधर्मयों ने यह स्वीकार कया है क धर्म, अल्लाह और परलोक में बदला दिये जाने पर वश्वास के बिना, जीवन स्थिर और स्थापत नहीं रह सकता। यहाँ तक क “फोल्तियर” का कथन हैः

“यदि अल्लाह का अस्तित्व न होता, तो हमारे ऊपर अनिवार्य होता क हम उसे पैदा करें।”

अर्थात हम लोगों के लए एक इलाह (पूज्य) का आवष्कार करें, जिसकी कृपा की वह आशा रखें, जिसके अज़ाब (यातना) से डरें तथा सत्कर्म

करते हुए दुष्कर्म से बचते हुए उसकी प्रसन्नता तलाश करें।

और एक बार ठठोल करते हुए कहता हैः

“तुम अल्लाह के अस्तित्व में क्यों संदेह प्रकट करते हो? यदि वह न होता, तो मेरी पत्नी मेरे साथ वश्वासघात करती और मेरा नौकर मेरी चोरी कर लेता।”

और “ब्लूतार्क” का कथन हैः

“बिना धरती के एक नगर को स्था पत करना, बिना इलाह (पूज्य) के एक राष्ट्र को स्था पत करने से अ धक आसान है!!”

# इस्लामी अक़ीदा की  वशेषताएं

इस्लामी अक़ीदा ऐसी वशेषताओं और गुणों का वाहक है, जो अन्य धारणाओं में नहीं हैं। यह निम्न लखत चीज़ों से प्रद र्शत होता हैः

## स्पष्ट अक़ीदाः

यह एक स्पष्ट और आसान अक़ीदा (धारणा) है। इसके अन्दर कोई पेचीदगी और उलझाव नहीं है। इसका सारांश यह है क इस अनुपम, सुसंचा लत, व्यवस्थित और सुदृढ़ संसार के पीछे एक रब पालनहार का हाथ है, जिसने इसे पैदा कया है, व्यवस्थित कया है और इसमें हर चीज़ को एक अनुमान और अंदाज़े से पैदा कया है। इस □इलाह या रब का न कोई साझी है, न इसके समान कोई चीज़ है और न इसके बीवी बच्चे हैं:

﴿بَل لَّهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَّهُۥ قَٰنِتُونَ﴾[3]

---

[3] सूरह अल्-बक़राः 116

“बल्कि आकाश और धरती की सारी चीज़ें उसीके अधिकार में हैं और हर एक उसका आज्ञाकारी है।”

यह एक स्पष्ट और स्वीकार्य अक़ीदा है। क्योंकि बुध्दि सदैव भिन्नता (अनेकता) और अधिकता की बजाय एकता और सम्बन्ध का तक़ाज़ा करती है और सारी चीज़ों को सदा एक ही कारण की ओर लौटाना चाहती है।

## प्राकृतिक अक़ीदा:

यह एक ऐसा अक़ीदा है, जो फ़ितरत से अलग और उसके विरुध्द नहीं है, बल्कि यह उसी प्रकार फितरत के अनुसार है, जिस प्रकार कि निर्धारित कुंजी अपने दृढ़ ताले के अनुसार होती है। क़ुर्आन इसी तत्व को स्पष्ट रूप से खुल्लम-खुल्ला बयान करता है:

﴿فَأَقِمۡ وَجۡهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفٗاۚ فِطۡرَتَ ٱللَّهِ ٱلَّتِي فَطَرَ ٱلنَّاسَ عَلَيۡهَاۚ لَا تَبۡدِيلَ لِخَلۡقِ ٱللَّهِۚ ذَٰلِكَ ٱلدِّينُ ٱلۡقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكۡثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَعۡلَمُونَ﴾.[4]

---

[4] सूरह अर्-रूम: 30

“सो, आप एकांत होकर अपना मुख दीन की ओर कर लें। अल्लाह तआला की वह फ़ितरत, जिसपर उसने लोगों को पैदा किया है। अल्लाह तआला के बनाये हुए को बदलना नहीं है। यह सीधा दीन है, किन्तु अधिकांश लोग नहीं समझते।”

और इसी ह़क़ीक़त को ह़दीसे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी स्पष्ट किया हैः

((كُلُّ مَوْلُوْدٍ يُوْلَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ-أَيْ عَلَى الْإِسْلَامِ-، وَ إِنَّمَا أَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ، أَوْ يُنَصِّرَانِهِ، أَوْ يُمَجِّسَانِهِ))

“हर पैदा होने वाला (शिशु) फ़ितरत -अर्थात इस्लाम- पर पैदा होता है, किन्तु उसके माता-पिता उसे यहूदी बना देते हैं, ईसाई बना देते हैं या मजूसी (आतिश परस्त) बना देते हैं।”

इससे मालूम हुआ कि इस्लाम ही अल्लाह तआला की फ़ितरत है। इसलिए इसे माता-पिता के प्रभाव की आवश्यकता नहीं है।

जहाँ तक अन्य धर्मों जैसे क यहूदियत, ईसाइयत और मजूसयत का सम्बन्ध है, तो यह माता-पता के सखाये हुए धर्म हैं।

## ठोस और सुदृढ़ अक़ीदाः

यह एक ठोस एवं सुदृढ़ और नियमत एवं निर्धारित अक़ीदा है, जिसमें कसी कमी-बेशी, परिवर्तन और हेर-फेर की गुंजाइश नहीं है। इसलए कसी शासक, वैज्ञानिक संस्था या धार्मक सम्मेलन को यह अधकार नहीं है क वह इसमें कोई चीज़ बढ़ाये अथवा इसमें कोई संशोधन और परिवर्तन करे। हर प्रकार के इज़ाफा या संशोधन एवं अस्वीकार्य है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

((مَنْ أَحْدَثَ فِي أَمْرِنَا هذَا مَا لَيْسَ مِنْهُ فَهُوَ رَدٌّ))

“जिसने हमारे इस मामले में कोई नई चीज़ निकाली, वह मर्दूद (अस्वीकार्य) है।”

अर्थात उसी के ऊपर लौटा दिया जायेगा।

और क़ुर्आन इसे नकारते हुए कहता हैः

﴿أَمۡ لَهُمۡ شُرَكَٰٓؤُاْ شَرَعُواْ لَهُم مِّنَ ٱلدِّينِ مَا لَمۡ يَأۡذَنۢ بِهِ ٱللَّهُۚ﴾[5]

"क्या उन लोगों ने (अल्लाह के) ऐसे साझी बना रखे हैं, जिन्होंने उनके लए दीन के ऐसे अह्काम निर्धारित कर दिये हैं, जो अल्लाह तआला के फ़रमाये हुए नहीं हैं?"

इस आधार पर हर प्रकार की बिद्अतें, कहानियाँ और ख़ुराफ़ात, जो मुसलमानों की कुछ कताबों में सम्मिलत कर दी गयी हैं या उनके जन-साधारण के बीच फैलायी गयी हैं, बातिल, असत्य और अस्वीकार्य हैं। इस्लाम उन्हें प्रमाणत नहीं करता है और न ही उन्हें इस्लाम के वरुध्द प्रमाण और तर्क के रूप में स्वीकार कया जा सकता है।

## प्रमा णत अक़ीदाः

यह एक प्रमाणत अक़ीदा है, जो अपने मसायल को सध्द करने के लए केवल पाबंदी और बाध्यता पर ही बस नहीं करता है और दूसरे

[5] सूरह अश्-शूराः 21

अक़ीदों और धारणाओं के समान यह नहीं कहता है कः

“अन्धे होकर वश्वास (श्रध्दा) रखो।”

या यह कः

“पहले वश्वास करो, फर ज्ञान प्राप्त करो।”

या यह कः

“अपनी दोनों आँखों को मूँद लो, फर मेरी पैरवी करो।”

या यह कः

“अज्ञानता (जिहालत) तक़्वा और परहेज़गारी की बुनियाद है।”

बल्कि उसकी कताब स्पष्ट रूप से कहती हैः

﴿قُلۡ هَاتُواْ بُرۡهَٰنَكُمۡ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ ١١١﴾[6]

“इनसे कहो क यदि तुम सच्चे हो, तो कोई प्रमाण पेश करो।”

---

[6] सूरह अल्-बक़राः 111

इसी प्रकार, केवल दिल और आत्मा को सम्बोधत करने और अक़ीदे के लए बुनियाद के तौर पर उनपर भरोसा करने पर बस नहीं करता है, बल्कि अपने मसायल को अखण्डनीय (वश्वस्त, प्रबल) प्रमाण, रौशन दलील और स्पष्ट तर्क के साथ पेश करता है, जो बुध्दियों की बाग-डोर को अपने क़ब्ज़े में ले लेती हैं और दिलों तक अपना रास्ता बना लेती हैं। अक़ीदे के उलेमा कहते हैं:

अक़्ल (बुध्दि) नक़्ल (वह बातें जिनका आधआर रिवायत या समाअ है) की बुनियाद है और सही नक़्ल (मन्क़ूल वस्तु) स्पष्ट अक़्ल (ववेक, बुध्दि) के वरुध्द नहीं होता है।

चुनांचे हम देखते हैं क कुर्आन उलूहियत (इबादत) के मसले में, नफ़्स (आत्मा) और इतिहास से अल्लाह तआला के वजूद, उसकी वह्दानियत (एकत्व) और उसके कमाल (सम्पूर्णता) पर दलीलें पेश करता है।

और बअ्स (मरने के उपरान्त पुनः जीवत कए जाने) की सम्भावना पर मनुष्य को प्रथम बार

पैदा करने, आसमानों और ज़मीन को पैदा करने और मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा (हरी-भरी) करने के द्वारा तर्क स्थापत करता है, और उसकी हिक्मत (रहस्य) पर, भलाई करने वाले को सवाब (प्रतिफल) देने और बुराई करने वाले को सज़ा देने में खुदाई (ईश्वरीय) न्याय और इन्साफ़ के द्वारा तर्क स्थापत करता हैः

﴿لِيَجۡزِيَ ٱلَّذِينَ أَسَٰٓـُٔواْ بِمَا عَمِلُواْ وَيَجۡزِيَ ٱلَّذِينَ أَحۡسَنُواْ بِٱلۡحُسۡنَى﴾[7]

“ता क अल्लाह लआला बुरे कर्म करने वालों को उनके कर्मों का बदला दे, और सत्कर्म करने वालों को अच्छा प्रतिफल प्रदान करे।”

---

[7] सूरह अन्-नज्मः 31

# अक़ीदे के अन्दर

## इस्लाम का संतुलन

इस्लामी अक़ीदा सारे पहलुओं से संतुलत होने के कारण अन्य धर्मों के अक़ीदों से श्रेठ और भन्न है। यह वशेषता उसे आसान और संतुष्टि के क़ाबिल बना देती है, जो स्वीकारने और पैरवी के योग्य है। इस वशेषता और अनुपमता को जानने के लए आगे आने वाली पंक्तियों को पढ़ें:

1. इस्लाम उन ख़ुराफ़ातियों, जो एतिक़ाद के अन्दर सीमा को पार कर जाते हैं, हर चीज़ को सच्चा मान लेते हैं और बिना प्रमाण के उसपर वश्वास करने लगते हैं, तथा उन भौतिकवादियों के बीच एतिक़ाद के अन्दर संतुलन पैदा करता है, जो चेतना के परे सारी चीज़ों को नकारते हैं और फ़तरत की आवाज़, चेतना की पुकार और मोजिज़ा (चमत्कार) की चीख को सुनने से भागते हैं।

चुनांचे इस्लमाम एतिक़ाद और वश्वास की दावत देता है; कन्तु, केवल उसीपर, जिसपर क़तई दलील और निश्चित प्रमाण स्थापत हो। इसके सवा अन्य चीज़ों को वह नकार देता है और भ्रम शुमार करता है। उसका सदा यह नारा हैः

﴿قُلْ هَاتُوا۟ بُرْهَـٰنَكُمْ إِن كُنتُمْ صَـٰدِقِينَ ﴾[8]

“यदि तुम सच्चे हो, तो अपने प्रमाण लाकर पेश करो।”

2. वह संतुलत है उन मुलह़िदों (अधर्मयों) के बीच, जो कसी भी इलाह (पूज्य) को नहीं मानते, अपने सीनों में फ़तरत की आवाज़ को दबा देते हैं और अपने सरों में बुध्दि की पुकार को चौलेंज करते हैं..... और उन लोगों के बीच जो अनेक माबूदों (ईश्वरों) को मानते हैं, यहां तक क वह बकरियों और गायों को भी पूजने लगते हैं और मूर्तियों और पत्थरों को ईश्वर बना लेते हैं।

[8] सूरह अल्-बक़राः 111

चुनांचे इस्लाम एक इलाह (पूज्य) पर वश्वास रखने की दावत देता है, जिसका कोई साझी नहीं। न उसने कसी को जना है, न वह कसी से जना गया है और न कोई उसका हमसर (समवर्ती) है। उसके अतिरिक्त जो लोग भी हैं और जो चीज़ें भी हैं, वह मख़लूक़ हैं। वह लाभ और हानि, मौत और ज़िन्दगी और दोबारा जीवत होने का अधकार नहीं रखते हैं। इसलए उनको पूज्य बनाना शर्क, अत्याचार और स्पष्ट पथभ्रष्टता है:

﴿وَمَنۡ أَضَلُّ مِمَّن يَدۡعُواْ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَن لَّا يَسۡتَجِيبُ لَهُۥٓ إِلَىٰ يَوۡمِ ٱلۡقِيَٰمَةِ وَهُمۡ عَن دُعَآئِهِمۡ غَٰفِلُونَ﴾[9]

“और उस व्यक्ति से बढ़कर गुमराह कौन होगा, जो अल्लाह के सवा ऐसों को पुकारता है, जो क़यामत तक उसकी प्रार्थना स्वीकार न कर सकें, बल्कि उनके पुकारने से मात्र बेख़बर (निश्चेत) हों!”

---

[9] सूरह अल्-अह़क़ाफ़: 5

3. और वह संतुलत है, उन लोगों के बीच, जो संसार को ही अकेला सत्य अस्तित्व समझते हैं और इसके अतिरिक्त उन सारी चीज़ों को, जिन्हें आँख से देख और हाथ से छू नहीं सकते, असत्य, ख़ुराफ़ात और भरम समझते हैं,..... और उन लोगों के बीच, जो संसार को एक भ्रम समझते हैं, जिसकी कोई ह़क़ीक़त नहीं, उसे चटियल मैदान में चमकती हुई रेत के समान समझते हैं, जिसे प्यासा व्यक्ति दूर से पानी समझता है, कन्तु जब उसके पास पहुँचता है, तो उसे कुछ भी नहीं पाता।

चुनांचे इस्लाम संसार के वजूद को एक वास्तवकता समझता है, जिसमें कोई संदेह नहीं है। कन्तु वह इस ह़क़ीक़त से एक दूसरी ह़क़ीक़त की ओर सफ़र करता है, जो इससे अधक बड़ी ह़क़ीक़त है। वह है, वह हस्ती जिसने इस संसार का निर्माण कया, इसे व्यवस्थित कया और इसके संचालन

में लगा हुआ है। वह हस्ती, अल्लाह तआला की है:

﴿إِنَّ فِي خَلۡقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَٱخۡتِلَٰفِ ٱلَّيۡلِ وَٱلنَّهَارِ لَأٓيَٰتٖ لِّأُوْلِي ٱلۡأَلۡبَٰبِ ۝١٩٠ ٱلَّذِينَ يَذۡكُرُونَ ٱللَّهَ قِيَٰمٗا وَقُعُودٗا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمۡ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلۡقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ رَبَّنَا مَا خَلَقۡتَ هَٰذَا بَٰطِلٗا سُبۡحَٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ﴾[10]

“आसमानों और ज़मीन की रचना और रात दिन के हेर-फेर में, सच-मुच बुध्दिमानों के लए निशानियां है, जो अल्लाह तआला का ज़िक्र खड़े और बैठे और अपनी करवटों के बल लेटे हुए करते हैं और आसनानों और धरती की पैदाइश में सोच-वचार करते हैं, और कहते हैं: ऐ हमारे परवरदिगार! तूने यह निरर्थक नहीं बनाया। तू पाक है। सो, हमें आग के अज़ाब (यातना) से बचा ले।”

4. वह संतुलत है, उन लोगों के बीच, जो मनुष्यों को पूज्य (इलाह) बनाते हैं, उन्हें रुबूबियत की वशेषताओं से सम्मानित

[10] सूरह आले-इम्रान: 190-191

करते हैं और उन्हीं को अपना इलाह (पूज्य) समझते हैं क वह जो चाहते हैं करते हैं और जो चाहते हैं फ़ैसला करते हैं, तथा उन लोगों के बीच, जिन्होंने आर्थक, सामाजिक या धार्मक व्यवस्थाओं और क़ानूनों को बन्दी बना लया है। सो, उसका उदाहरण हवा के झोंके में पर (पंख) या कठपुथली के समान है, जिसके धागों को समाज, इक्तिसाद या भाग्य हिला रहा है।

चुनांचे इस्लाम की दृष्टि में मनुष्य एक ज़िम्मेदार और मुकल्लफ़ (उत्तरदाता, नियम बध्द) मुख़्लूक़ है। संसार का सरदार है। अल्लाह का एक बन्दा है। अपने आस-पास की चीज़ों को बदलने की उतनी ही शक्ति रखता है, जितनी अपने आपको बदलने की। (अल्लाह तआला का फ़र्मान हैः)

﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوۡمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُواْ مَا بِأَنفُسِهِمۡۗ﴾[11]

[11] सूरह अर्-रअदः 11

“निःसंदेह, अल्लाह तआला कसी क़ौम की ह़ालत नहीं बदलता, जबतक वह स्वंय उसे न बदलें, जो उनके दिलों में है।”

5. वह संतुलत है उन लोगों के बीच, जो नबियों को पवत्र मानते हैं, यहां तक क उन्होंने उन्हें उलूहियत (ईश्वरता) या इलाह (ईश्वर) के पुत्रत्व के पद पर पहुंचा दिया, तथा उन लोगों के बीच, जिन्होंने उन्हें झुठलाया, उनपर आरोप लगाए और यातनाओं के पहाड़ तोड़े।

पैग़म्बर हमारे समान मनुष्य हैं। खाना खाते हैं और बाज़ारों में चलते-फरते हैं। उनमें से अधकांश के पास बीवी-बच्चे भी हैं। उनके और उनके अतिरिक्त अन्य लोगों के बीच अन्तर मात्र यह है क अल्लाह तआला ने उनपर वह़्य (ईश्वाणी) के द्वारा उपकार तथा मोजिज़ात (चमत्कारों) के द्वारा उनका समर्थन और सहयोग कया हैः

﴿قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦۖ وَمَا كَانَ لَنَآ أَن نَّأْتِيَكُم بِسُلْطَٰنٍ إِلَّا بِإِذْنِ ٱللَّهِۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ ٱلْمُؤْمِنُونَ﴾[12]

“उनके पैग़म्बरों ने उनसे कहा क यह तो सच है क हम, तुम जैसे ही इन्सान हैं, कन्तु अल्लाह तआला अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है, अपनी अनुकम्पा करता है। अल्लाह के हुक्म (अनुमति) के बिना हमारे बस की बात नहीं क हम तुम्हें कोई मोजिज़ा (चमत्कार) दिखायें। और ईमान वालों को केवल अल्लाह तआला ही पर भरोसा रखना चाहिए।”

6. वह संतुलत है, उन लोगों के बीच, जो संसार की वास्तवकताओं की जानकारी प्राप्त करने के स्रोत की हैसयत से केवल बुध्दि (अक़्ल) पर वश्वास करते हैं, और उन लोगों के बीच, जो केवल वह़्य और इल्हाम पर वश्वास करते हैं। कसी चीज़ को

[12] सूरह इब्राहीमः 11

नकारने या स्वीकारने में बुध्दि की योगदान को नहीं मानते।

जबक इस्लाम बुध्दि पर वश्वास रखता है। सोच-वचार और ग़ौर व फ़क्र की दावत देता है, उसके अन्दर जुमूद और अनुकरण को नकारता है, आदेशो और निषेधों से संबोधत करता है, और संसार की महान वास्तवकताओं; अल्लाह ताआला के वजूद और नबूअत के दावे की सच्चाई को सध्द करने के लए उसपर भरोसा करता है। वह वह्य पर इस हैसयत से वश्वास रखता है क वह बुध्दि की पूर्ति करने वाली और उन चीज़ों में उसकी सहायक और मददगार है, जिनमें बुध्दियाँ भटक जाती हैं, मतभेद का शकार हो जाती हैं और जिन पर शहवतों और ख़्वाहिशात का दबाव और बल चढ़ जाता है। उसकी उस चीज़ की ओर मार्गदर्शन और रहनुमाई करने वाली है, जो उससे सम्बन्धित नहीं है और जो उसके बस में नहीं है। जैसे की ग़ैबिय्यात (अदृश्य

चीज़ें), समइय्यात (वह बातें जिनका आधार वह्य हो जैसे जन्नत, जहन्नम आदि) और अल्लाह तआला की इबादत के तरीक़े। दुनिया में भलाई अथवा बुराई करने पर, मरने के बाद दूसरी दुनिया में सवाब और सज़ा के रूप में न्यायपूर्ण ख़ुदाई (ईश्वरीय) बदला दिए जाने पर वश्वास रखने में, इस फ़तरी और असली अह़सास को समर्थन मलता है क उस बदकार और अत्याचार से बदला लेना अनिवार्य और आवश्यक है, जिसने सांसारिक न्याय से अपना पीछा छुड़ा लया है, और उस व्यक्ति को सवाब आवश्यक है, जिसने भलाई और नेकी की है और उसका प्रचारक रहा है, परन्तु उसे घृणा और उत्पीड़न के सवा कुछ न मला हो..... तथा सदाचारियों और दुराचारियों, नेक और बुरे लोगों, सुधार करने वालों और भ्रष्टाचारियों के बीच बराबरी न की जायः

﴿أَمۡ حَسِبَ ٱلَّذِينَ ٱجۡتَرَحُواْ ٱلسَّيِّـَٔاتِ أَن نَّجۡعَلَهُمۡ كَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ سَوَآءَ مَّحۡيَاهُمۡ وَمَمَاتُهُمۡۚ سَآءَ مَا يَحۡكُمُونَ ٢١﴾

وَخَلَقَ ٱللَّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ بِٱلْحَقِّ وَلِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٢﴾[13]

"क्या उन लोगों का, जो बुरे काम करते हैं, यह गुमान है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे, जो ईमान लाये और नेक काम किये कि उनका मरना जीना बराबर हो जाय, बुरा है वह फ़ैसला, जो वह कर रहे हैं। और आसमानों और ज़मीन को अल्लाह ने बहुत न्याय के साथ पैदा किया है और ताकि हर व्यक्ति को उसके किये हुए काम का पूरा बदला दिया जाय और उनपर अत्याचार न किया जाय।"

जन्नत और जहन्नम और उनमें जो कुछ ह़िस्सी (ज़ाहिरी) और मानवी (बातिनी) नेमत और अज़ाब है उस पर ईमान रखना, मनुष्य की वस्तुस्थिति के अनुसार है, इस ह़ैसयत से कि वह शरीर और आत्मा से मिलकर बना है और उनमें से हर एक की

---

[13] सूरह अल्-जासियाः 21-22

कुछ आशाएं और आवश्यकताएं हैं। तथा इस ह़ैसयत से भी क कुछ लोग ऐसे हैं, जिनके लए शरीर को छोड़कर केवल आत्मा की नेमत या अज़ाब पर्याप्त नहीं है। जिस प्रकार क उनमें से कुछ लोग ऐसे हैं, जिन्हें आत्मा को छोड़कर केवल शरीर की नेमत या यातना संतुष्ट नहीं कर सकती है। इसीलए जन्नत में खाना, पानी, बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें (सुन्दरियाँ) और महानतम अल्लाह की प्रशंसा है.... और जहन्नम में ज़न्जीरें, तौक़, थूहड़, खून-पीप और कांटेदार पेड़ों का भोजन होगा, जो न मोटा करेगा और न भूख मटाएगा, और उनके लए इसके उपरान्त अपमान, ज़िल्लत और रुसवाई होगी, जो सबसे अधक कठोर और कष्ट दायक होगी।

# जीवन के तमाम क्षेत्रों में इस्लाम का यथार्थवाद

इस्लाम के नियम, उसके  सध्दांत और उसकी  शक्षाएं मानव जीवन के हर क्षेत्र में यथार्थवाद पर आधारित हैं। वह मानव जीवन की परिस्थितियों, आवश्यकताओं और  व भन्न हालात पर नज़र रखता है। इस सच्चाई से पर्दा उठाने के  लए हम इस यथार्थवाद को केवल दो क्षेत्रों के द्वारा स्वष्ट करेंगेः

## प्रथमः इबादतों के अन्दर इस्लाम का यथार्थवादः

इस्लाम कई वास्तवक एवं यथार्थानुरूप इबादतों के साथ आया है। क्योंक वह इन्सान के अत्मा की अल्लाह तआला से सम्पर्क स्थापत करने की प्यास को जानता है। इसलए उसपर ऐसी इबादतें फ़र्ज़ क़रार दिया है, जो उसकी प्यास को बुझाती, उस की तेज भूक को मटाती और उसके हृदय के

ख़ालीपन (रिक्तता) की पूर्ति करती हैं। किन्तु, उसने इन्सान की सीमित शक्ति को ध्यान में रखा है। इसीलिए, उसे किसी ऐसी चीज़ का बाध्य नहीं किया है, जो उसे कठिनाई और तंगी में डाल देः

﴿وَمَا جَعَلَ عَلَيۡكُمۡ فِي ٱلدِّينِ مِنۡ حَرَجٖۚ﴾[14]

“और दीन के मामले में उसने तुमपर कोई तंगी नहीं डाली है।”

**(क)** उदाहरणतः इस्लाम ने जीवन की वास्तविकता और ह़क़ीक़त तथा उसके ख़ानदानी, समाजी और आर्थिक परिस्थितियों और रोज़ी की तलाश में धरती के समतल और आसान रास्तों में भाग-दोड़ को ध्यान में रखा है। इसलिए मुसलमानों से इस बात का मुतालबा नहीं किया है कि वह पादरियों के समान गिरजाघरों में इबादत के लिए सारी चीजों से कटकर एकांत हो जायें। बल्कि यदि वह ऐसा करना चाहे, तब

[14] सूरह अल्-ह़ज्जः 78

भी उसे इस एकांत की अनुमति नहीं दी है। मुसलमान को कुछ ऐसी इबादतों का बाध्य कया है, जो उसे उसके रब (पालनहार) से जोड़ती तो हैं, परन्तु उसे उसके समाज से काटती नहीं हैं। उन (इबादतों) से वह अपनी आख़रत को आबाद तो करता है, परन्तु उनके पीछे अपनी दुनिया को बर्बाद नहीं करता। इस्लाम ने उनसे इस बात का मुतालबा नहीं कया है क वह जीवन भर रूहानियत की ख़ालस फ़ज़ा में ऊँची उड़ान भड़ते रहें, बल्कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने कुछ साथयों से फ़रमायाः "एक घंटा और एक घंटा।"[15]

**(ख)** इस्लाम को इंसान के अन्दर उकताहट और उदासीनता की फ़तरत का ज्ञान है। इसलए उसने वभन्न प्रकार की इबादतों को अनिवार्य कया है। कुछ इबादतें शारीरिक हैं, जैसे नमाज़ और रोज़ा। कुछ इबादतों का सम्बन्ध माल से है, जैसे

---

[15] मुस्लिम

ज़कात और सदक़ा व ख़ैरात और तीसरी क़स्म की इबादतें वह हैं, जो माल और शरीर दोनों से सम्बन्धित हैं, जैसे ह़ज और उम्रा। कुछ इबादतों को दैनिक कया गया है, जैसे नमाज़। कुछ इबादतों को वार्षक या मौसमी क़रार दिया गया है, जैसे रोज़ा और ज़कात और कुछ को जीवन में केवल एक बार अनिवार्य कया गया है, जैसे ह़ज। फर जो व्यक्ति अधक भलाई और अल्लाह तआला की निकटता चाहता है, उसके लए ऐच्छिक इबादतों का द्वार खोल दिया गया है और नफली इबादतें करना वैध कर दिया गया है:

﴿فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ﴾[16]

“जो व्यक्ति अपनी इच्छा से नेकी और भलाई करना चाहे, तो वह उसके लए श्रेष्ठ है।”

[16] सूरह अल्-बक़राः 184

(ग) इस्लाम ने मनुष्य के आपातकालीन परिस्थितियों, जैसे यात्रा और बीमारी आदि को ध्यान में रखा है। इसी लए रुख़्सतों और आसानियों को वैध कया है, जो अल्लाह तआला को पसन्द है। उदाहरण स्वरूप, बीमार का अपनी शक्ति अनुसार बैठकर या पहलू के बल नमाज़ पढ़ना, ज़ख़्मी आदमी का यदि स्नान और वज़ू के लए पानी प्रयोग करना हानिकारक हो तो तयम्मुम करना, बीमार का रमज़ान में रोज़ा न रखना और बाद में अनिवार्य रूप से क़ज़ा करना, गर्भवति और दूध पलाने वाली महिलाओं का यदि उन्हें अपनी या अपने बच्चों की जान का भय हो तो रोज़ा न रखना तथा अधक आयु वाले बूढ़े व्यक्ति और बूढ़ी स्त्री का रोज़ा न रखना और हर दिन के बदले फ़द्या के रूप में एक मस्कीन (निर्धन) को खाना खलाना।

इसी प्रकार यात्री के लए चार रक्अत वाली नमाज़ों को क़स्र (कम) करना और ज़ुह्र

तथा अस्र एवं मग़्रब तथा इशा की नमाज़ों को जमा करके एक साथ पढ़ना, चाहे दोनों नमाज़ों को पहली नमाज़ के समय पढ़ी जाय अथवा दोनों को दूसरी नमाज़ के समय.....। यह सारी रुख़्सतें लोगों की वास्तवक स्थिति का लह़ाज़ करते हुए और उनकी नित-नयी और परिवर्तनशील परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्रदान की गयी हैं। जैसे क रोज़े की आयत में अल्लाह तआला का फ़र्मान हैः

يُرِيدُ ٱللَّهُ بِكُمُ ٱلۡيُسۡرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ ٱلۡعُسۡرَ[17]

"अल्लाह तआला का इरादा तुम्हारे साथ आसानी का है, सख़्ती का नहीं।"

## द् वतीयः व्यवहार के अन्दर इस्लाम का वास्त वकतावादः

इस्लाम ने ऐसे वास्तवक अख़्लाक़ व व्यवहार को पेश कया है, जिसने जन-साधारण की साधारण शक्ति (क्षमता) को ध्यान में रखते हुए इन्सानी

[17] सूरह अल्-बक़राः 185

कमज़ोरी, इन्सानी जज़्बात और भौतिक तथा मानसिक आवश्यकताओं को स्वीकार किया है।

(क) उदाहरण के तौर पर इस्लाम ने इस्लाम में प्रवेश करने वाले पर यह अनिवार्य नहीं किया है कि वह अपनी धन-सम्पत्ति और रहन-सहन की चीज़ों का परित्याग कर दे, जैसा कि इन्जील मसीह़ के बारे में उल्लेख करता है कि उन्होंने अपनी पैरवी करने के इच्छुक लोगों से कहाः

"अपने माल-धन को बेच दो, फिर मेरे पीछे चलो।"

और न ही क़ुर्आन ने उस प्रकार की कोई बात कही है, जिस प्रकार इन्जील का कहना हैः

"धनी व्यक्ति आसमानों की बादशाहत में उस समय तक प्रवेश नहीं पा सकता, जब तक कि ऊँट सूई के नाके में प्रवेश न कर ले।"

बल्कि इस्लाम ने व्यक्ति और समाज की धन और माल की ज़रूरत को ध्यान में रखा है। चुनांचे उसे जीवन का स्थापतकर्ता समझा है। उसे बढ़ाने, वक्सित करने और उसकी सुरक्षा करने का आदेश दिया है। अल्लाह तआला ने क़ुर्आन के अन्दर कई स्थानों में मालदारी और धन की नेमत के द्वारा इन्सान पर उपकार का उल्लेख कया है। अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमायाः

﴿ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَأَغْنَىٰ﴾[18]

“और तुझे निर्धन पाकर धनी नहीं बनाया?”

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

((مَا نَفَعَنِي مَالُ أَحَدٍ كَمَالِ أَبِيْ بَكْرٍ))[19]

[18] सूरह अज़्-ज़ुहाः 8

“अबू बक्र के धन की तरह  कसी और धन ने मुझे लाभ नहीं पहुँचाया।”

और अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फरमाया:

((نِعْمَ الْمَالُ الصّالِحُ لِلرَّجُلِ الصَّالِحِ))[20]

“नेक आदमी के  लए पाक और शुध्द माला क्या ही बेहतरीन पूंजी है!”

**(ख)** क़ुर्आन और सुन्नत में इस प्रकार की कोई बात नहीं आई है, जिस प्रकार इन्जील में मसीह़ के कथन आए हैं: “अपने दुश्मनों से प्रेम करो.... अपने को बुरा-भला कहने वालों के  लए बरकत की दुआ करो..... जो तुम्हारे दाहिने गाल पर

---

[19] इस ह़दीस को इमाम अह़मद ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत  कया है और इसकी सनद सह़ीह़ है जैसा  क मुनावी की  कताब अल-यसीर में है।

[20] इस ह़दीस को इमाम अह़मद ने अपनी मुस्नद में और तबरानी ने मोजमुल-कबीर में सहीह सनद के साथ रिवायत  कया है।

मारे, उसे बायाँ गाल भी पेश कर दो.....और जो तुम्हारी क़मीस चुरा ले, उसे अपना तहबन्द भी दे दो।”

यह चीज़ सीमत अवस्था में और कसी वशेष स्थिति के उपचार के लए वैध हो सकती है, कन्तु प्रत्येक स्थिति में, हर वातावरण में, हर ज़माने में और सारे लोगों के लए सामान्य निर्देश और सुझाव के रूप में उचत नहीं है। क्योंक साधारण इन्सान से अपने दुश्मन से मुहब्बत करने और उसे बुरा-भला कहने वाले को आशीर्वाद देने का मुतालबा करना, उसके सहन और बर्दाश्त से अधक बोझ डालने के मायने में है। इसी लए इस्लाम ने मनुष्य से अपने दुश्मन के साथ न्याय से काम लेने का मुतालबा करने पर ही बस कया हैः

﴿وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَـَٔانُ قَوْمٍ عَلَىٰٓ أَلَّا تَعْدِلُوا۟ ۚ ٱعْدِلُوا۟ هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۖ﴾[21]

"कसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें अन्याय करने पर न उभारे, न्याय कया करो, जो तक़्वा के अ धक निकट है।"

इसी प्रकार दाहिने गाल पर मारने वाले के लए बायाँ गाल भी पेश कर देना, ऐसा काम है, जो लोगों के दिलों पर बहुत भारी गुज़रता है, बल्कि बहुत से लोगों के लए ऐसा करना दुश्वार और कठिन है। यह भी हो सकता है क यह काम दुराचारी और बुरे लोगों को नेक और सदाचारी लोगों पर निडर और साहसी बना दे। कभी–कभार -कुछ हालतों में और कुछ लोगों के साथ- अनिवार्य हो जाता है क बुरे और बदमाश लोगों को क्षमा करने की बजाय वैसा ही दण्ड दिया जाय, जैसा अत्याचार उन्होंने कया

[21] सूरह अल्-माइदाः 8

था, ताक ऐसा न हो क वह प्रसन्नता का अनुभव करें और अधक ज़्यादती और अत्याचार करने लगें।

(ग) इस्लामी अख़्लाक़ वास्तवकता में यह भी है क उसने लोगों के बीच स्वभावक और अमली अन्तर तथा फ़र्क़ को स्वीकार कया है। क्योंक सारे लोग ईमान की शक्ति, अल्लाह के आदेशों का पालन करने, उसकी निषेध की हुई बातों से बचने और ऊँचे आदर्शों को अपनाने में एक ही श्रेणी और एक ही दर्जे के नहीं होते हैं।

चुनांचे एक श्रेणी इस्लाम की है, दूसरी श्रेणी ईमान की है और तीसरी श्रेणी एहसान की है, जो क सर्वोच्च श्रेणी है। जैसा क ह़दीसे जिब्रील में इसकी ओर संकेत है। प्रत्येक श्रेणी के कुछ लोग हैं। इसी प्रकार कुछ लोग गुनाहों के द्वारा अपने ऊपर अत्याचार करने वाले हैं, कुछ लोग मध्य श्रेणी के हैं और कुछ

लोग नेकयों और भलाइयों में जल्दी करने वाले हैं। जैसा क अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम में बयान कया है।

1. इस अर्थ की पूर्ति इससे भी होती है क इस्लामी अख़्लाक़ ने मुत्तक़यों के बारे में यह अनिवार्य नहीं कया है क वह हर बुराई से पवत्र और हर गुनाह से पाक हों। मानो क वह परों वाले फ़रिश्ते हैं। बल्कि उसने इस बात को ध्यान में रखा है क मनुष्य मी और आत्मा से मलकर बना है। यदि आत्मा उसे कभी ऊँचा उठाती है, तो मी उसे कभी नीचे गरा देती है। जबक मुत्तक़यों की वशेषता यह है क वह क्षमा याचना करने वाले और अल्लाह की ओर लौटने वाले होते हैं। जैसा क अल्लाह तआला ने अपने इस फर्मान में उनकी वशेषता का उल्लेख कया है:

﴿وَٱلَّذِينَ إِذَا فَعَلُواْ فَٰحِشَةً أَوۡ ظَلَمُوٓاْ أَنفُسَهُمۡ ذَكَرُواْ ٱللَّهَ فَٱسۡتَغۡفَرُواْ لِذُنُوبِهِمۡ وَمَن يَغۡفِرُ ٱلذُّنُوبَ إِلَّا ٱللَّهُ وَلَمۡ يُصِرُّواْ عَلَىٰ مَا فَعَلُواْ وَهُمۡ يَعۡلَمُونَ ١٣٥﴾[22]

"जब उनसे कोई बेहूदा (अश्लील) काम हो जाय या कोई गुनाह कर बैठें, तो तुरन्त अल्लाह का ज़िक्र और अपने गुनाहों के लए क्षमा माँगते हैं, वास्तव में अल्लाह के अतिरिक्त कौन गुनाहों को क्षमा कर सकता है? और वह ज्ञान के होते हुए कसी बुरे काम पर हठ नहीं करते हैं।"

[22] सूरह आले-इम्रानः 135

# इस्लाम में

# क़ानून साज़ी के स्रोत

जब मनुष्य के पास क़ानून साज़ी और आदेश व निषेध का स्रोत, मनुष्य द्वारा निर्मित क़वानीन और संविधान की बजाय, उसका पालनहार और जन्मदाता होता है, तो उसकी अनेक महत्वपूर्ण फ़ायदे प्राप्त होते हैं। इसका कारण स्पष्ट है और वह है, इस संविधान के बनाने वाले अर्थात अल्लाह तआला का कमाल और सम्पूर्णता। जबकि अन्य क़वानीन और संविधानों के साथ मनुष्य की कमज़ोरी और कोताही लगी रहती है।

इस्लामी क़वानीन के फ़ायदों को निम्न प्रकार से उल्लेखित किया जा सकता हैः

## पारस्परिक टकराव और मतभेद से सुरक्षाः

शरीअत का स्रोत मनुष्य के पालनहार और सृष्टा के होने का सर्वप्रथम प्रभाव यह है कि वह उस

पारस्परिक टकराव और मतभेद से सुरक्षत है, जिससे इन्सानी क़वानीन व संवधान और परिवर्तित धर्म पीड़त हैं।

मनुष्य की यह प्रकृति है क एक युग के लोग दूसरे युग के लोगों से मतभेद रखते हैं। बल्कि एक ही युग में एक समय के लोग दूसरे समय के लोगों से, एक देश के लोग दूसरे देश के लोगों से, बल्कि एक ही देश में एक प्रदेश के लोग दूसरे प्रदेश के लोगों से और एक ही प्रदेश में एक परिवेश के लोग दूसरे परवेश के लोगों के मतभेद रखते हैं।

हम प्रायः देखते हैं क जवानी की अवस्था में एक व्यक्ति के वचार, अधेड़पन या बुढ़ापे की अवस्था के वचार के वरुध्द होते हैं और प्रायः हम देखते हैं क कठिनाई और निर्धनता की घड़ी में आदमी के वचार, ख़ुश्हाली और मालदारी की अवस्था के वचार से भन्न होते हैं।

जब मनुष्य की बुध्दि की यह प्रकृति है और आवश्यक रूप से वह समय, स्थान, परिस्थितियों

और दशाओं से प्रभावत होता है, तो फर उसके द्वारा बनाये गये क़वानीन के पारस्परिक टकराव और मतभेद से सुरक्षत होने की कल्पना कैसे की जा सकती है? चाहे वह क़वानीन कल्पना और वश्वास से सम्बन्धित हों, या व्यवहार और अमल से,.... निःसंदेह पारस्परिक टकराव और अन्तर उसका एक आवश्यक अंग है।

इस पारस्परिक टकराव की झल्कियों में से एक यह है क प्रत्येक ख़ुदसाख़्ता (गढ़े हुए) और परिवर्तित धार्मक और इन्सानी क़वानीन और व्यवस्थाओं में हम अतिश्योक्ति देख और अनुभव कर सकते हैं। जैसा क यह हक़ीक़त आत्मिक और भौतिक, व्यक्तिगत और सामुहिक, वास्तवकता और आदर्शता, अक़्ल और दिल, दृढ़ता और परिवर्तन, और इनके अतिरिक्त अन्य वपरीत चीज़ों के बारे में उनके दृष्टिकोण से स्पष्ट है, जिसके बारे में प्रत्येक धर्म या क़ानून केवल एक ही पहलु पर नज़र रखता है, दूसरे पहलु से बेपरवाही बरतता है या उसपर अत्याचार करता है। कन्तु इस्लामी क़ानून इसके वपरीत है। क्योंक

उसका स्रोत मनुष्य का उत्पत्तिकर्ता है। मनुष्य नहीं!

## पक्षपात एवं स्वेच्छा से पाक होनाः

इस्लाम की रब्बानियत (अर्थात रब की ओर से होने) के फ़ायदों में से एक यह है क वह नितांत न्याय पर आधारित है और पक्षपात, अत्याचार और ख़्वाहिशात की पैरवी से पवत्र है, जिससे मनुष्य सुरक्षत नहीं रह सकता, चाहे वह कोई भी हो।

हां, कोई भी ग़ैर मासूम व्यक्ति -ज्ञान और आत्मसंयम के मामले में उसका स्तर कतना ही ऊँचा क्यों न हो- ख़्वाहिशात और व्यक्तिगत, खानदानी, क्षेत्रीय, दलीय और राष्ट्रीय रुझानों और झुकाव से प्रभावत होए बिना नहीं रह सकता। अगरचे वह ज़ाहिरी तौर पर न्याय प्रय और ग़ैरजानिबदारी का पैरोकार दिखता हो।

यदि मनुष्य की कोई निर्धारित इच्छा या वशेष रुझान हो, जो उसकी रहनुमाई और उसके वचार को परिवर्तित करता हो और उसके फैसले को उसी

ओर मोड़ने वाला हो जिसका वह इच्छुक और प्रेमी है, तो यह गम्भीर समस्या है। इसके अन्दर इन्सान की ज़ाती कोताही व अभाव के साथ साथ, पैरवी की जाने वाली ख़्वाहिश भी एकत्र हो गयी। इस प्रकार समस्या और गम्भीर हो गयीः

﴿وَمَنۡ أَضَلُّ مِمَّنِ ٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ بِغَيۡرِ هُدٗى مِّنَ ٱللَّهِۚ﴾[23]

“उस व्यक्ति से बढ़कर पथ-भ्रष्ट कौन होगा, जो अल्लाह तआला के मार्गदर्शन के बिना अपनी ख़्वाहिशात के पीछे चलने वाला हो?”

कन्तु जहाँ तक “अल्लाह तआला की व्यवस्था” और “अल्लाह तआला के क़ानून” का प्रश्न है, तो स्पष्ट है क उसे लोगों के पालनहार ने लोगों के लए बनाया है। उस हस्ती ने उसे बनाया है, जो समय और स्थान से प्रभावत नहीं होती है। इसलए क वही समय और स्थान को पैदा करने वाली है। उसपर ख़्वाहिशात और रुझानात का बस नहीं चलता है, क्योंक वह ख़्वाहिशात व रुझानात

[23] सूरह अल्-क़ससः 50

से पवत्र है। वह हस्ती कसी राष्ट्र, रंग और दल का पक्ष नहीं लेती है, इसलए क वह सबका पालनहार है और सबलोग उसके ग़ुलाम हैं। इसलए उसके बारे में एक दल को छोड़कर दूसरे दल का, एक नस्ल को छोड़कर दूसरे नस्ल का और एक राष्ट्र को छोड़कर दूसरे राष्ट्र का पक्ष लेने और जानिबदारी करने की कल्पना नहीं की जा सकती।

## सम्मान और पैरवी करने में सरलताः

इसी प्रकार इस शरीअत की वशेषताओं में से एक वशेषता यह भी है क इसकी ईश्वरीयता व्यवस्था या क़ानून को पवत्रता और सम्मान से सुसज्जित करती है, जो मनुष्य के बनाये हुए कसी व्यवस्था और क़ानून में नहीं पाया जाता है।

यह सम्मान और पवत्रता यहां से जन्म लेता है क मोमन अल्लाह तआला के कमाल (पूर्णता) और उसके अपनी तख़्लीक (उत्पत्ति) और आदेश में हर प्रकार की कमी से पाक होने का एतिक़ाद रखता है। वह इस बात पर भी यक़ीन रखता है

क अल्लाह तआला ने हर चीज़ को बेहतर रूप में पैदा कया है और हर चीज़ को अपनी कारीगरी से सुदृढ़ कया है। जैसा क अल्लाह तआला ने अपनी कताब में फ़रमाया है:

﴿صُنۡعَ ٱللَّهِ ٱلَّذِيٓ أَتۡقَنَ كُلَّ شَيۡءٍۚ﴾[24]

"यह अल्लाह तआला की कारीगरी है, जिसने हर चीज़ को सुदृढ़ बनाया है।"

इसी प्रकार अल्लाह तआला ने अपनी शरीअत और उतारी हुई कताब को भी सुदृढ़ बनाया है। जैसा क अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम के बारे में फ़रमाया है:

﴿كِتَٰبٌ أُحۡكِمَتۡ ءَايَٰتُهُۥ ثُمَّ فُصِّلَتۡ مِن لَّدُنۡ حَكِيمٍ خَبِيرٍ ١﴾[25]

"यह एक ऐसी कताब है क उसकी आयतें सुदृढ़ की गयी हैं, फर स्पष्ट रूप से उनकी व्याख्या की गयी है, एक हकीम (तत्वदर्शी) सर्वज्ञानी की ओर से।"

---

[24] सूरह अन्-नम्ल: 88

[25] सूरह हूद: 1

सो, उसने जो कुछ पैदा किया और मुक़द्दर किया है, उसमें हिक्मत वाला है और जो कुछ उसने आदेश दिया है और मनाही की है, उसमें वह हिक्मत वाला है। (अल्लाह तआला का फ़रमान हैः)

﴿مَّا تَرَىٰ فِي خَلۡقِ ٱلرَّحۡمَٰنِ مِن تَفَٰوُتٖۖ﴾[26]

“तुम्हें रहमान (अल्लाह) की उत्पत्ति में कोई गड़बड़ी नहीं दिखायी देगी।”

तुम्हें रहमान की शरीअत में कोई दोष और बेजोड़पन नहीं मिलेगा। सो, पवित्र है अल्लाह तआला, जो सर्वश्रेष्ठ पैदा करने वाला और तमाम हाकिमों का हाकिम है।

इस सम्मान और तक़्दीस के अधीन यह है कि मनुष्य उस व्यवस्थापक की शिक्षाओं और उसके आदेशों से प्रसन्न हो और खुले दिल से, उन्हें स्वीकार कर ले। यह अल्लाह और उसके रसूल पर विश्वास के तक़ाज़ों में से हैः

---

[26] सूरह अल्-मुल्कः 3

﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤۡمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيۡنَهُمۡ ثُمَّ لَا يَجِدُواْ فِيٓ أَنفُسِهِمۡ حَرَجٗا مِّمَّا قَضَيۡتَ وَيُسَلِّمُواْ تَسۡلِيمٗا ٦٥﴾[27]

“सो सौगन्ध है तेरे पालनहार की! यह मो मन नहीं हो सकते, जब तक क आपस के तमाम मतभेदों में आपको ह़ा कम न मान लें। फर जो निर्णय आप उनमें कर दें, उनसे अपने दिल में कसी प्रकार तंगी और अप्रसन्नता न अनुभव करें और आज्ञाकारिता के साथ स्वीकार कर लें।”

इस सम्मान, तक़्दीस और सुस्वीकार्यता से यह आवश्यक हो जाता है क उन्हें अमल में लाने में जल्दी की जाय, सुख-दुख में उनपर कान धरा जाय और आज्ञापालन की जाय, कसी प्रकार का टाल-मटोल या काहिली न की जाय और न ही व्यवस्था के अनुसार चलने, उसकी पाबन्दी करने और आदेशों तथा निषेध बातों का अनुपालन करने से जान छुड़ाने के लए बहाना बाजी की जाय।

[27] सूरह अन्-निसाः 65

हम यहाँ केवल दो उदाहरणों का उल्लेख करने पर बस करते हैं, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समयकाल में अल्लाह तआला की शरीअत और उसके आदेश तथा निषेध के प्रति दृष्टिकोण और रवैये को स्पष्ट करते हैं:

## प्रथम उदाहरणः शराब के ह़राम कए जाने के पश्चात मदीने में मो मनों का रवैया

अरबों को शराब (मदिरा), उसके बर्तनों और उसकी मह़फ़िलों से बड़ा लगाव था। अल्लाह तआला को भली-भाँति इसका ज्ञान था। इसलिए अल्लाह तआला ने उसे मरहलावार हराम करने का रास्ता अपनाया। यहां तक क वह निर्णायक आयत उतर गयी

, जिसने उसे निश्चित रूप से ह़राम क़रार दे दिया और यह घोषणा की कः

﴿رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ ٱلشَّيْطَٰنِ﴾[28]

“यह सब अप वत्र, शैतान के कामों में से हैं।”

चुनांचे इस आयत के आधार पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका पीना, बेचना और उसे ग़ैरमुस्लिमों को उपहार देना तक ह़राम क़रार दे दिया। फर क्या था! मुसलमानों ने उनके पास जो भी शराब के भण्डार और उसके बर्तन थे, उन्हें लाकर मदीने की ग लयों में उन्डेल दिया। यह इस बात की घोषणा थी क वह शराब से पाक और पवत्र हो गये।

अल्लाह तआला की इस शरीअत की पैरवी का एक अनूठा पहलू यह है क जब उनमें से एक दल को यह आयत पहुंची, तो उनमें एक ऐसा व्यक्ति भी था, जिसके हाथ में शराब का प्याला था, जिसमें से उसने कुछ पी लया था और कुछ उसके हाथ में बाक़ी था, तो उसने उसे अपने मुंह से फेंक दिया और अल्लाह तआला के फ़र्मान [29] فَهَلۡ أَنتُم

---

[28] सूरह अल्-माइदाः 90

[29] सूरह अल्-माइदाः 91

مُّنتَهُونَ (अर्थातः तो क्या तुम बाज़ आने वाले हो?) का पालन करते हुए- कहाः ऐ हमारे पालनहार! हम बाज़ आ गये।

यदि हम इस्लामी परिवेश में शराब के वरुध्द जंग करने और उसका काम समाप्त करने में इस स्पष्ट सफलता की तुलना उस भयानक पराजय से करेंगे, जिससे संयुक्त राज्य अमरीका उस समय दो-चार हुआ, जब उसने क़ानून साज़ी करके और फ़ौजी दस्तों (अर्थात शक्ति) के द्वारा शराब के वरुध्द युध्द करने का इरादा कया, तो हमें ज्ञात हो जाएगा क मानव-जाति का सुधार केवल आसमान का क़ानून और संवधान ही कर सकता है, जिसकी वशेषता यह है क वह शक्ति और शासन पर भरोसा करने से पहले आत्मा और वश्वास पर भरोसा करता है।

**दूसरा उदाहरणः** प्राथमक मुसलमान महिलाओं का वह रवैया जो उन्होंने अल्लाह तआला के उस आदेश के प्रति अपनाया, जिसके द्वारा अल्लाह तआला ने उनपर जाहिलयत काल (इस्लाम से

पूर्व अरब जिस अज्ञानता और पथभ्रष्टता में जी रहे थे, उसे जाहिलयत का काल कहते हैं।) के समान बिना पर्दे के घूमना वर्जित (ह़राम) कर दिया और उनपर पर्दा करना और ह़या के साथ रहना अनिवार्य कर दिया। चुनांचे जाहिलयत काल के समय स्त्री अपने सीने को खोलकर चलती थी। उसके ऊपर कुछ नहीं होता था। स्त्री प्रायः अपनी गर्दन, बाल और कानों की बालयों को दिखाती रहती थी। सो, अल्लाह तआला ने मोमन महिलाओं पर पहली जाहिलयत के समान बेपर्दा घूमना ह़राम क़रार दे दिया। उन्हें आदेश दे दिया क वह जाहिलयत की स्त्रियों से भन्न रहें। उनकी चाल-ढाल का वरोध करें। अपने चाल-चलन, रहन-सहन और तमाम अह़वाल में पर्दे और सभ्यता पर वशेष ध्यान दें। अपनी गर्दनों पर दुपे डाल लया करें। अर्थात अपने सर के दुपे को इस तरह कसकर बाँध लया करें क वह सीने के खुले हुए भाग को ढाँक लें। इस प्रकार सीना, गर्दन और कान छुप जाएगा।

यहाँ पर उम्मुल मोमनीन सैयिदा आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा हमें बताती हैं क कस प्रकार प्रथम इस्लामी समाज में मुहाजिरीन और अन्सार की स्त्रियों ने इस इलाही (ईश्वरीय) क़ानून का स्वागत कया, जो महिलाओं के जीवन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन से सम्बन्धित था और वह है चाल-ढाल (वेश-भूषा), बनाव-संगार और वस्त्र।

आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: प्रथम मुहाजिरीन की महिलाओं पर अल्लाह तआला रहमत बरसाये...... जब अल्लाह तआला ने यह आयत उतारीः

﴿وَلۡيَضۡرِبۡنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّۖ﴾[30]

“और अपने गरीबान पर अपनी ओढ़नियाँ डाल लया करें।”

तो उन्होंने अपनी चादरों को फाड़कर उनसे ओढ़नियाँ बना लीं।[31]

---

[30] सूरह अन्-नूरः 31

[31] बुख़ारी

यह है मोमन महिलाओं का मौक़फ़ उस चीज़ के बारे में, जिसका अल्लाह तआला ने उन्हें हुक्म दिया है। वह जिस चीज़ का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है, उसका पालन करने और जिस चीज़ से रोका है उससे बचने में जल्दी करती हैं। न कोई संकोच, न प्रतीक्षा। उन्होंने एक दिन, दो दिन या इससे अधक प्रतीक्षा नहीं कया, ताक वह नये कपड़े ख़रीद या सल सकें, जो उनके सर को ढाँपने के योग्य हो और गरीबान पर डालने के लए मुनासब हो, बल्कि जो भी कपड़ा मल गया और जो भी रंग मयस्सर हो सका, वही उनके योग्य और मुनासब था और यदि नहीं मला, तो अपने कपड़ों और चादरों को फाड़कर अपने सर पर बाँध लया। इस बात की कोई परवाह नहीं क इसके बाद वह कैसी दिखेंगी।

## मनुष्य को मनुष्य की पूजा और ग़ुलामी से आज़ादी दिलानाः

उपरोक्त सभी वशेषताओं से बढ़कर इस रब्बानियत के परिणामों और फ़ायदों में से एक यह है क

मनुष्य, मनुष्य की पूजा और ग़ुलामी से आज़ाद हो जाता है। इसलए क पूजा के अनेक प्रकार और रूप हैं और उनमें से सर्वाधक ख़तरनाक और सबसे अधक प्रभावपूर्ण यह है क मनुष्य अपने ही समान दूसरे मनुष्य के आगे आत्म समर्पन कर दे। चुनांचे वह उसके लए जो चाहे और जब चाहे ह़लाल कर दे, उसपर जो चाहे और जिस तरह चाहे ह़राम ठहरा दे, उसे जिस चीज़ का चाहे आदेश दे और वह आदेश का पालन करे, और जिस चीज़ से चाहे मनाही कर दे और वह उससे दूरी बना ले। दूसरे शब्दों में वह उसके लए एक "जीवन व्यवस्था" या "जीवन मार्ग" निर्धारित कर दे और उसके लए उसे स्वीकार करने, उसे मानने और उसका अनुसरण करने के अतिरिक्त कोई चारा न हो।

सच्ची बात यह है क जो हस्ती इस व्यवस्था या मार्ग को निर्धारित करने, लोगों को इसपर बाध्य करने और उन्हें इसके अधीन करने का अधकार रखती है, वह अकेले अल्लाह की हस्ती है, जो लोगों का पालनहार, लोगों का स्वामी और लोगों

का इलाह (उपास्य) है। इसलए केवल उसी का यह अधकार है क वह लोगों को आदेश दे और उन्हें मना करे, उनके लए कसी चीज़ को ह़लाल करे और उनपर कसी चीज़ को ह़राम करे। इसलए क यह उसकी रुबूबियत (ख़ालक़, मालक और पालनहार होने), उन्हें पैदा करने, और उन्हें हर प्रकार की नेमतों से सम्मानित करने का तक़ाज़ा हैः

﴿وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ ٱللَّهِ﴾[32]

“तुम्हारे पास जितनी भी नेमतें हैं, सब उसी अल्लाह की दी हुई हैं।”

यदि कुछ लोग अपने लए इस अधकार का दावा करें -या उनके लए इसका दावा कया जाय- तो यह लोग अल्लाह तआला से उसकी रुबूबियत के अधकार में झगड़ रहे हैं, उसकी उलूहियत के मामले में हस्तक्षेप कर रहे हैं और उन्होंने अल्लाह के कुछ बन्दों को अपना बन्दा और ग़ुलाम बना

[32] सूरह अन्-नह़लः 53

लया है, हालाँक वह भी उन्हीं के समान मख़्लूक़ हैं, उनपर भी अल्लाह की सुन्नतों में से वही चीज़ें जारी होती हैं, जो अन्य लोगों पर होती हैं।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है क क़ुर्आन करीम ने यहूद एवं नसारा के इस व्यहार को नकारा है क वह अपनी उस आज़ादी का परित्याग का कर बैठे, जिसपर उनकी पैदाइश हुई थी और अपने उन वद्वानों और दरवेशों की पूजा और ग़ुलामी पर सहमत हो गये, जो उनके लए आदेश और निषेध, ह़लाल और ह़राम के क़ानून बनाने के अधकार के मालक बन बैठे और कसी भी व्यक्ति को आपत्ति व्यक्त करने, टिप्पिणी करने या पुनःवचार करने का कोई अधकार नहीं रहा। इसीलए क़ुर्आन करीम ने अह्ले कताब (यहूद एवं नसारा) पर शर्क और ग़ैरुल्लाह की इबादत करने का ठप्पा लगा दिया है।

इसी बारे में क़ुर्आन करीम का फर्मान हैः

﴿ٱتَّخَذُوٓاْ أَحۡبَارَهُمۡ وَرُهۡبَٰنَهُمۡ أَرۡبَابٗا مِّن دُونِ ٱللَّهِ وَٱلۡمَسِيحَ ٱبۡنَ مَرۡيَمَ وَمَآ أُمِرُوٓاْ إِلَّا لِيَعۡبُدُوٓاْ إِلَٰهٗا وَٰحِدٗاۖ لَّآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَۚ سُبۡحَٰنَهُۥ عَمَّا يُشۡرِكُونَ﴾[33]

“उन्होंने अल्लाह को छोड़कर अपने  वद्वानों और दरवेशों को रब (उपासना पात्र) बना  लया और मर्यम के बेटे मसीह़ को भी, हालाँ क उन्हें केवल एक अल्लाह की उपासना का आदेश दिया गया था, जिसके  सवा कोई पूजा पात्र नहीं, वह (अल्लाह) उनके साझी बनाने से पाक और प वत्र है।”

---

[33] सूरह अत्-तौबाः 31

# इस्लमाम क्या है?

सम्पूर्ण इस्लाम, जिसके साथ अल्लाह तआला ने अपने संदेशवाहक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा है, वह पाँच स्तम्भों पर आधारित है। कोई मनुष्य उस समय तक पक्का-सच्चा मुसलमान नहीं हो सकता, जब तक उनपर ईमान न ले आए, उनकी अदायगी न करे और उनपर कार्यबध्द न हो। यह पाँच स्तम्भ इस प्रकार हैं:

1. इस बात क गवाही देना क अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य पूज्य नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के संदेश्वाहक हैं।
2. नमाज़ क़ायम करना।
3. ज़कात (अनिवार्य धर्म-दान) देना।
4. रमज़ान महीने के रोज़े रखना।
5. अल्लाह के पवत्र घर काबा का हज करना, यदि वहाँ तक पहुँचने का सामर्थ्य हो।

आगे इन पाँच स्तम्भों में से प्रत्येक स्तम्भ की संक्षप्त व्याख्या पेश की जा रही हैः

**प्रथम स्तम्भः** “ला इलाहा इल्लल्लाह” (अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं) और “मुहम्मदुर-रसूलुल्लाह” (मुहम्मद अल्लाह के संदेश्वाहक हैं) की गवाहीः

यह गवाही मनुष्य के इस्लाम में प्रवेश करने का द्वार और कुंजी है। यह कसी अन्य गवाही या कहे जाने वाले शब्द के समान नहीं है। कदाप नहीं। बल्कि इस धर्म के अन्दर इसका एक महान और गहरा अर्थ है। यही कारण है क जो व्यक्ति इसे अपने मुख से कह ले और इसके अर्थ को भली-भाँति जान ले, उसका प्रतिफल यह है क क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसे स्वर्ग में दाख़ल करेगा। इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस वषय में फरमाते हैं:

((من شهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، و أن محمدا عبده و رسوله، وكلمته ألقاها إلى مريم و روح منه، والجنة حق، والنار حق، أدخله الله الجنة على ماكان من العمل))[34]

“जिसने इस बात क गवाही दी क अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं और यह गवाही दी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके संदेशवाहक हैं, और ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बन्दे, उसके संदेशवाहक तथा उसका क लमा हैं, जिसे मर्यम की ओर अल्लाह तआला ने डाल दिया था और उसकी ओर से रूह हैं, और यह क जन्नत सत्य है और नरक सत्य है, तो ऐसे व्यक्ति को अल्लाह तआला स्वर्ग में प्रवेश दिलायेगा, चाहे उसका कर्म कुछ भी हो।”

“ला इलाहा इल्लल्लाह” की गवाही का अर्थ यह है क आकाश और धरती में अकेले अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य वास्तवक पूज्य नहीं। वही सच्चा पूज्य है। अल्लाह के अतिरिक्त जिसकी भी

---

[34] बुख़ारी एवं मुस्लिम

मनुष्य पूजा करता है, चाहे उसकी गुणवत्ता कुछ भी हो, वह झूठा और असत्य है।

“मुहम्मदुर-रसूलुल्लाह” (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अल्लाह के संदेशवाहक होने) की गवाही देने का अर्थ यह है क आप यह ज्ञान और वश्वास रखें क मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम संदेश्वाहक हैं, जिन्हें अल्लाह तआला ने समस्त मानव और जिन्नात की ओर संदेशवाहक बनाकर भेजा है और यह क वह एक उपासक हैं, उपासना के पात्र नहीं हैं (अर्थात उनकी उपासना नहीं की जाएगी।), वह एक संदेशवाहक हैं, उन्हें झुठलाया नहीं जाएगा, बल्कि उनका आज्ञापालन और अनुसरण कया जाएगा। जिसने उनका आज्ञापालन कया वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा और जिसने उनकी अवहेलना की, वह नरक में जायेगा। पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

((ما من رجل يهودى أو نصراني يسمع بي، ثم لا يؤمن بالذى جئت به إلا دخل النار))

“जो भी यहूदी या ईसाई मेरे बारे में सुना, फर मेरी लाई हुई शरीअत पर ईमान न लाये, वह नरक में प्रवेश करेगा।”

इसी प्रकार आप यह ज्ञान और वश्वास रखें क शरीअत के क़ानून और आदेश तथा निषेध को, चाहे उसका सम्बन्ध इबादतों से हो, शासन व्यवस्था से हो, ह़लाल और ह़राम से हो, आर्थक, सामाजिक या व्यवहारिक जीवन से हो या इनके अतिरिक्त कसी अन्य क्षेत्र से, केवल इसे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मार्ग से ही लया जा सकता है। इसलए क अल्लाह के रसूल मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही अपने रब की ओर से उसकी शरीअत के प्रसारक व प्रचारक हैं। अतः कसी मुसलमान के लए वैध नहीं है क वह पैग़म्बर मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त कसी अन्य रास्ते से आये हुए कसी क़ानून, आदेश या मनाही को स्वीकार करे।

## द् वतीय स्तम्भः नमाज़

नमाज़ को अल्लाह तआला ने इसलए मश्रूअ कया है, ताक यह अल्लाह और बन्दे के बीच सम्बन्ध का माध्यम बन सके, जिसमें वह उसकी आराधना करे और उसे पुकारे। नमाज़ धर्म का खम्बा और उसका मूल स्तम्भ है, जिस प्रकार क तम्बू का खम्बा होता है। यदि वह गर जाय, तो शेष स्तम्भों का कोई मूल्य नही रह जाता। इसी के बारे में क़यामत के दिन मनुष्य से सर्वप्रथम पूछ-ताछ की जायेगी। यदि नमाज़ स्वीकार कर ली गयी, तो उसके सारे कर्म स्वीकार कर लए जायेंगे और यदि इसे ठुकरा दिया गया, तो उसके सारे कर्म ठुकरा दिए जायेंगे।

अल्लाह तआला ने नमाज़ के लए कुछ शर्तें निर्धारित की हैं तथा इसके कुछ अर्कान और वाजिबात भी हैं, जिन्हें उनके लक्षत वध के अनुसार करना प्रत्येक नमाज़ी के लए आवश्यक है, ताक उसकी नमाज़ अल्लाह के पास ग्रहणयोग्य हो सके।

## नमाज़ और उसकी रकअतों की संख्याः

नमाज़ों की संख्या दिन और रात में पाँच है, जो इस तरह हैं: फ़ज्र की नमाज़ दो रक्अत, ज़ुह्र की नमाज़ चार रक्अत, अस्र की नमाज़ चार रक्अत, मग़्रिब की नमाज़ तीन रक्अत और इशा की नमाज़ चार रक्अत। इनमें से प्रत्येक नमाज़ का एक निर्धारित समय है, जिससे उसको वलम्ब करना जायज़ नहीं, जिस प्रकार क उसे उसके समय से पहले पढ़ना जायज़ नहीं। यह नमाजें मस्जिदों में पढ़ी जायेंगी, जो अल्लाह के घर हैं। इससे केवल उस व्यक्ति को छूट है, जिसके पास कोई शर्ई कारण हो, जैसे क यात्रा और बीमारी आदि।

## नमाज़ के फ़ायदे और वशेषताएंः

इन नमाज़ों को पाबंदी के साथ पढ़ने के बहुत से लौकक और परलौकक लाभ और वशेषताएं हैं, जिनमें से कुछ यह हैं:

नमाज़ मनुष्य के, संसार की बुराइयों और कठिनाइयों से सुरक्षत रहने का कारण है। इसके बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

((من صلى الصبح فى جماعة فهو فى ذمة الله، فانظر ياابن آدم لا يطلبنك الله من ذمته بشئ))[35]

“जिसने सुबह (फ़ज्र) की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी, वह अल्लाह तआला की सुरक्षा में है। सो ऐ आदम के बेटे! देख, कहीं अल्लाह तआला तुझसे अपनी सुरक्षा में से  कसी चीज़ का मुतालबा न करने लगे।”

 नमाज़ गुनाहों की क्षमा का कारण है, जिनसे कोई व्यक्ति सुरक्षत नहीं रह पाता। इसके बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

((من تطهر فى بيته، ثم مضى إلى بيت من بيوت الله ليقضى فريضة من فرائض الله، كانت خطواته إحداها تحط خطيئة، والأخرى ترفع درجة))[36]

---

[35] इसे मुस्लिम ने रिवायत  कया है।

“जो व्यक्ति अपने घर में वज़ू करता है, फिर अल्लाह के घरों में से किसी घर (मस्जिद) में अल्लाह तआला की अनिवार्य की हुई किसी फ़र्ज़ नमाज़ को पढ़ने के लिए जाता है, तो उसके एक पग पर एक गुनाह झड़ता है और दूसरे पग पर एक पद बलन्द होता है।”

 नमाज़, नमाज़ पढ़ने वालों के लिए फ़रिश्तों की दुआ और उनकी क्षमा याचना का कारण है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

((الملائكة تصلي على أحدكم ما دام في مصلاه الذي صلى فيه ما لم يحدث، تقول: اللّٰهُمَّ اغفر له، اللّٰهُمَّ ارحمه))[37]

“फ़रिश्ते तुम्हारे लिए रहमत की दुआ करते रहते हैं, जब तक तुममें से कोई व्यक्ति अपने उस स्थान पर होता है, जिसमें उसने नमाज़ पढ़ी है, जब तक कि उसका वज़ू टूट न जाय। फ़रिश्ते दुआ करते हैं: ऐ अल्लाह! उसे क्षमा कर दे! ऐ अल्लाह! उसे क्षमा कर दे!”

---

[36] इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

[37] इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।

नमाज़ शैतान पर वजय प्राप्त करने, उसे परास्त और अपमानित करने का साधन है।

 नमाज़ मनुष्य के लए क़यामत के दिन सम्पूर्ण प्रकाश प्राप्त करने का कारण है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

((بشر المشائين في الظلم إلى المساجد، بالنور التام يوم القيامة))[38]

“अन्धेरों में मस्जिदों की ओर जाने वालों को, क़यामत के दिन सम्पूर्ण प्रकाश (नूर) की शुभ सूचना दे दो।”

 जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का कई गुना अज्र व सवाब है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

((صلاة الجماعة أفضل من صلاة الفذ بسبع و عشرين درجة))[39]

“जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से सत्ताईस गुना अ धक बेहतर है।”

---

[38] इसे अबू दाऊद और ति र्मज़ी ने रिवायत कया है।

[39] बुख़ारी एवं मुस्लिम

नमाज़ के कारण उन मुनाफ़क़ों के अवगुणों में से एक अवगुण से छुटकारा मलता है, जिनका ठिकाना जहन्म का सबसे निचला भाग है। । नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

((ليس صلاة أثقل على المنافقين من صلاة الفجر والعشاء، ولو يعلمون ما فيهما لأتوهما و لو حبوا))[40]

“मुना फ़क़ों पर फ़ज्र और इशा की नमाज़ से भारी कोई नमाज़ नहीं। यदि उन्हें पता चल जाय  क इन दोनों नमाज़ों में क्या -अज्र व सवाब- है, तो वह उसमें अवश्य आयें, चाहे घुटनों के बल घिसट कर ही क्यों न हो?”

 यह मनुष्य के लए वास्तवक सौभाग्य, हार्दिक सन्तुष्टि की प्राप्ति, मानसक रोगों तथा जीवन की समस्याओं से छुटाकारा पाने का उचत मार्ग है, जिनसे आज कल अधकांश लोग जूझ रहे हैं। जैसे  क शोक, चन्ता, बेचैनी, व्याकुलता और बहुत से पारिवारिक, व्यापारिक और वैज्ञानिक मामलों में नाकामी इत्यादि।

---

[40] बुख़ारी एवं मुस्लिम

नमाज़ स्वर्ग में प्रवेश पाने का कारण है। । नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

((من صلى البردين دخل الجنة))[41]

“जिसने दो ठंडी नमाज़ें (अस्र और फ़ज्र की नमाज़ें) पढ़ीं, वह जन्नत में प्रवेश करेगा।”

((لن يلج النار أحد صلى قبل طلوع الشمس و قبل غروبها)) يعنى الفجر والعصر.[42]

“जिस व्यक्ति ने सूरज निकलने और उसके डूबने से पहले नमाज़ पढ़ी, वह जहन्नम में कदा प नहीं जाएगा।” अर्थात फ़ज्र और अस्र की नमाज़।

इसके अतिरिक्त इस्लाम के अन्दर अन्य नमाज़ें भी हैं, जो अनिवार्य नहीं हैं, बल्कि सुन्नत (ऐच्छिक) हैं। जैसे क ईदैन (ईदुल-फ़त्र और ईदुल अज़्हा) की नमाज़, चाँद और सूरज ग्रहण की नमाज़, इस्तिस्क़ा (वर्षा माँगने) की नमाज़ और इस्तिख़ारा की नमाज़ इत्यादि।

---

[41] इसे बुख़ारी एवं मुस्लिम ने रिवायत  कया है।

[42] इसे मुस्लिम ने रिवायत  कया है।

## तीसरा स्तम्भः ज़कात

ज़कात इस्लाम का तीसरा स्तम्भ है। इसके महत्व के कारण अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम में बहुत से स्थानों पर इसका और नमाज़ का एक साथ उल्लेख कया है। यह कुछ निर्धारित शर्तों के साथ मालदारों की सम्पत्तियों में एक अनिवार्य अधकार है। इसका वतरण कुछ निर्धारित लोगों के बीच, निर्धारित समय में कया जाता है।

## ज़कात फ़र्ज़ करने की ह़िक्मतः

इस्लाम में ज़कात के फ़र्ज़ कए जाने की अनेक हिक्मतें और लाभ हैं, जिनमें से कुछ ये हैं:

 मोमन के हृदय को गुनाहों और नाफरमानियों के प्रभाव तथा दिलों को उनके दुष्ट परिणामों से पवत्र करना एवं उसकी आत्मा को बखीली और कंजूसी की बुराई और उनके बुरे नतीजों से पाक और शुध्द करना। अल्लाह तआला का फर्मान हैः

﴿خُذۡ مِنۡ أَمۡوَٰلِهِمۡ صَدَقَةٗ تُطَهِّرُهُمۡ وَتُزَكِّيهِم بِهَا﴾[43]

”उनके मालों में से ज़कात ले लीजिए, जिसके द्वारा आप उन्हें पाक और प वत्र कीजिए।”

 निर्धन मुसलमानों की कफ़ायत, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति, उनकी देख-रेख तथा उन्हें अल्लाह के सवा कसी के सामने हाथ फैलाने की ज़िल्लत से बचाना।

 क़र्ज़दार मुसलमानों का क़र्ज़ चुकाकर उनके शोक और चन्ता को हल्का करना।

 अस्त-व्यस्त और खन्न दिलों को ईमान और इस्लाम पर एकत्र करना और उन्हें दृढ़ वश्वास न होने के कारण पाए जाने वाले संदेहों और मानसक व्याकुलताओं से निकाल कर दृढ़ ईमान और परिपूर्ण वश्वास की ओर ले जाना।

 मुसलमान यात्री की सहायता करना। यदि वह रास्ते में फंस जाय और उसके पास यात्रा के लए पर्याप्त व्यय न हो, तो उसे ज़कात के कोष से

---

[43] सूरह अत्-तौबाः 103

इतना माल दिया जाएगा, जिससे उसकी आवश्यकता पूरी हो जाय और वह अपना घर लौट लौट सके।

 धन को पवत्र करना, उसको बढ़ाना, उसकी सुरक्षा करना तथा अल्लाह तआला के आज्ञापालन, उसके आदेश के सम्मान और उसकी मख़्लूक़ पर उपकार करने की बरकत से, उसे दुर्घटनाओं से बचाना।

## जिन धनों में ज़ाकत अनिवार्य हैः

वह चार प्रकार के हैं, जो निम्नलखत हैं:

 धरती से निकलने वाले अनाज और ग़ल्ले।

 कीमतें (मूल्य) जैसे सोना चांदी और बैंके नोट (करेंसयाँ)।

 व्यवसाय के सामान। इससे अभप्राय हर वह वस्तु है, जिसे कमाने और व्यपार करने के लए तैयार कया गया हो, जैसे ... जानवर, अनाज, गाड़याँ आदि।

 चौपाये। इससे मुराद ऊँट, बकरी और गाय हैं।

इनसब पूंजियों में ज़कात कुछ निर्धारित शर्तों के पाये जाने पर ही अनिवार्य है। यदि वह नहीं पायी गयीं, तो ज़कात अनिवार्य नहीं है।

## ज़कात के ह़क़दार लोग

इस्लाम में ज़कात के कुछ वशेष मसारिफ (उपभोक्ता) हैं और वह निम्नलखत वर्ग के लोग हैं:

 ग़रीब और निर्धन लोग। (जिनके पास अपनी ज़रूरतों का आधा सामान भी न हो।)

 मस्कीन लोग। (जिनके पास अपनी ज़रूरतों का आधा या उससे अधक सामान हो, कन्तु पूरा सामान न हो।)

 ज़कात वसूल करने पर नियुक्त कर्मचारी।

 ऐसे लोग जिनके दिल की तसल्ली की जाय। (अर्थात नौमुस्लिम, मुसलमान क़ैदी आदि)

 ग़ुलाम (दास या दासी) आज़ाद करने के लए।

- क़र्ज़ खाये हुए लोग तथा तावान उठाने वाले लोग।

- अल्लाह के मार्ग में अर्थात जिहाद (धर्म युध्द) के लए।

- यात्री (अर्थात वह व्यक्ति जिसका यात्रा के दौरान माल अस्बाब समाप्त हो जाय।

## ज़कात के फ़ायदेः

- अल्लाह और उसके रसूल के आदेश के पालन और अल्लाह और उसके रसूल की मर्ज़ी को अपने नफ़्स की प्रय चीज़ -धन- पर प्राथमकता देना।

- अमल के सवाब का कई गुणा बढ़ जाना। (अल्लाह तआला का फ़रमाम हैः)

مَثَلُ ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمۡوَٰلَهُمۡ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنۢبَتَتۡ سَبۡعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنۢبُلَةٖ مِّاْئَةُ حَبَّةٖۗ وَٱللَّهُ يُضَٰعِفُ لِمَن يَشَآءُۚ[44]

[44] सूरह अल्-बक़राः 261

“जो लोग अपना धन अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च करते हैं, उसका उदाहरण उस दाने के समान है, जिससे सात बा लयाँ निकलें और हर बाली में सौ दाने हों, और अल्लाह जिसे चाहे बढ़ा-चढ़ा कर दे।”

 ज़कात निकालना ईमान का प्रमाण और उसकी निशानी है। जैसा क ह़दीस में हैः

((والصدقة برهان))[45]

“और सदक़ा (ईमान का) प्रमाण है।”

 गुनाहों और दुष्ट आचरण की गन्दगी से पवत्रता प्राप्त करना। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿خُذۡ مِنۡ أَمۡوَٰلِهِمۡ صَدَقَةٗ تُطَهِّرُهُمۡ وَتُزَكِّيهِم بِهَا﴾[46]

“आप उनके धनों में से सद्क़ा ले लीजिए, जिसके द्वारा आप उनको पाक-साफ कर दें।”

---

[45] इसे मुस्लिम ने रिवायत कया है।

[46] सूरह अत्-तौबाः 103

धन में बढ़ोतरी, बरकत, उसकी सुरक्षा और उसकी बुराई से बचाव। इसलिए कि हदीस में हैः

((ما نقص مال من صدقة))[47]

“सदक़ा करने से धन में कोई कमी नहीं होती।”

 सदक़ा करने वाला क़्यामत के दिन अपने सदक़ा की छाँव में होगा। जैसा कि एक हदीस में है कि अल्लाह तआला सात लोगों को उस दिन अपनी छाया में स्थान देगा, जिस दिन उसकी छाया के अतिरिक्त कोई और छाया न होगीः

((رجل تصدق بصدقة فأخفاها حتى لا تعلم شماله ما تنفق يمينه))[48]

“एक वह व्यक्ति जिसने सदक़ा किया, तो उसे इस प्रकार गुप्त रखा कि जो कुछ उसके दाहिने हाथ ने ख़र्च किया, उसका बायाँ हाथ उसे नहीं जानता है।”

---

[47] इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

[48] बुख़ारी तथा मुस्लिम

सदक़ा अल्लाह तआला की कृपा और दया का कारण हैः (अल्लाह तआला का फ़र्मान हैः)

﴿وَرَحۡمَتِي وَسِعَتۡ كُلَّ شَيۡءٖۚ فَسَأَكۡتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤۡتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ﴾[49]

“मेरी रह़मत सारी चीज़ों को सम्मि लत है, सो उसे मैं उन लोगों के लिए अवश्य लखूँगा, जो डरते हैं और ज़कात देते हैं।”

## चौथा स्तम्भः रोज़ा

रोज़े का अर्थ है, रोज़े की नियत से, फ़ज्र निकलने से लेकर सूरज डूबने तक, तमाम रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ों, जैसे खाने-पीने और सम्भोग से रुक जाना। रोज़ा रमज़ानुल मुबारक के पूरे महीने का रखना है, जो साल में एक बार आता है।

अल्लाह तआला का फ़र्मान हैः

﴿يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ﴾[50]

---

[49] सूरह अल्-आराफ़ः 156

“ऐ लोगो जो ईमान लाये हो! तुमपर रोज़े अनिवार्य कए गये हैं, जिस प्रकार तुमसे पूर्व के लोगों पर अनिवार्य कए गये थे। ताक तुम डरने वाले (परहेज़गार) बन जाओ।”

और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

((من صام رمضان إيمانا و احتسابا غفر له ما تقدم من ذنبه))[51]

“जिसने ईमान के साथ और सवाब की नियत रखते हुए रमज़न के रोज़े रखे, उसके पछले गुनाह क्षमा कर दिए जायेंगे।”

## रोज़े के फ़ायदेः

इस महीने का रोज़ा रखने से मुसलमान को अनेक ईमानी, मानसक और स्वास्थ सम्बन्धी फ़ायदे प्राप्त होते हैं, जिनमें से कुछ यह हैं:

 रोज़ा पाचन क्रया और मेदा (आमाशय) को सालों साल लगातार (निरन्तर) कार्य करने के कष्ट

---

[50] सूरह अल्-बक़राः 183

[51] बुख़ारी एवं मुस्लिम

से आराम पहुँचाता है, अनावश्यक चीज़ों को पघला देता है, शरीर को शक्ति प्रदान करता है तथा बहुत से रोगों के लए भी लाभदायक है।

 रोज़ा नफ़्स को शाइस्ता (सभ्य, शष्ट) बनाता है और भलाई, व्यवस्था, आज्ञापालन, धैर्य और इख़्लास (निःस्वार्थता) का आदी बनाता है।

 रोज़ेदार को अपने रोज़ेदार भाइयों के बीच बराबरी का अहसास होता है। वह उनके साथ रोज़ा रखता है और उनके साथ ही रोज़ा खोलता है। इस तरह उसे सर्व-इस्लामी एकता का अनुभव होता है। उसे भूख का अहसासा होता है, तो अपने भूखे भाइयों की खबरगीरी और देख-रेख करता है।

तथा रोज़े के कुछ आदाब हैं, जिनसे रोज़ेदार का सुसज्जित होना महत्वपूर्ण है, ताक उसका रोज़ा शुध्द और पूर्ण हो।

कुछ चीज़ें रोज़े को व्यर्थ करने वाली भी हैं। यदि रोज़ेदार उनमें से कसी एक चीज़ को कर ले, तो उसका रोज़ा व्यर्त हो जाता है। इस्लाम ने बीमार, यात्री, दूध पलाने वाली महिला और इनके

अतिरिक्त अन्य लोगों की हालत का लह़ाज़ करते हुए यह वैध कया है क वह इस महीने में रोज़ा तोड़ दें और साल के आने वाले समय में उसकी क़ज़ा कर लें।

## पांचवाँ स्तम्भः ह़ज

यह स्तम्भ मुसलमान स्त्री तथा पुरुष पर पूरे जीवन में केवल एक बार अनिवार्य है। इससे अधक बार करना नफ़्ल और सुन्नत है, जिस पर क़यामत के दिन अल्लाह तआला के पास बहुत बड़ा पुण्य मलेगा। ह़ज मुसलमान पर केवल उसी समय अनिवार्य है, जब वह उसके करने की शक्ति रखता हो। चाहे वह आर्थक शक्ति हो या शारीरिक शक्ति। यदि वह इसकी शक्ति न रखता हो, तो इस स्तम्भ को अदा करने से भार मुक्त हो जाता है।

## ह़ज के फ़ायदेः

ह़ज की अदायगी से मुसलमान को कई फ़ायदे प्राप्त होते हैं, जिनमें से कुछ ये हैं:

यह आत्मा, शरीर और धन के द्वारा अल्लाह तआला की उपासना है।

 ह़ज में संसार के हर स्थान से मुसलमान एकत्र होते हैं, सबके सब एक स्थान पर मलते हैं, एक ही पोशाक पहनते हैं और एक ही समय में एक ही रब की इबादत करते हैं। राजा और प्रजा, धनी और निर्धन, काले और गोरे, अरबी और अजमी के बीच कोई अन्तर नहीं होता। हाँ, यदि होता है तो केवल आत्मसंयम और सत्कर्म के आधार पर। इस प्रकार मुसलमानों के बीच आपस में परिचय, सहयोग, प्रेम तथा एकता का भाव उत्पन्न होता है और इस सम्मेलन के द्वारा वह उस दिन को याद करते हैं, जिस दिन अल्लाह तआला उनसब को मरने के पश्चात एक साथ पुनः जीवत करेगा और हिसाब के लए एक ही स्थान पर एकत्र करेगा। इसलए वह अल्लाह तआला की आज्ञापालन करके मरने के बाद के जीवन के लए तैयारी करते हैं।

## ह़ज के कार्यकर्म का क्या उद्देश्य है?

 कन्तु प्रश्न यह है क काबा, जो क मुसलमानों का क़ब्ला है, जिसकी ओर अल्लाह तआला ने उन्हें, चाहे वह कहीं भी हों, नमाज़ के अन्दर मुख करने का आदेश दिया है, उसकी चारों ओर तवाफ़ (परिक्रमा) करने का उद्देश्य क्या है? इसी प्रकार मक्का के अन्य स्थानों अरफ़ात और मुज़दलफ़ा में उसके निर्धारित समय में ठहरने तथा मना में क़्याम करने का क्या उद्देश्य है? तो याद रखना चाहिए क इसका केवल एक ही उद्देश्य है और वह हैः उन पाक और पवत्र स्थानों में उसी कैफ़यत और उसी तरीक़े पर अल्लाह तआला की इबादत करना, जिस प्रकार अल्लाह तआला ने आदेश दिया है।

जहाँ तक स्वयं काबा तथा उन स्थानों और सारी सृष्टि की बात है, तो ज्ञात होना चाहिए क न तो उनकी पूजा और उपासना की जाएगी और न ही वे लाभ और हानि पहुँचा सकते हैं। इबादत केवल अल्लाह की की जाएगी और लाभ और हानि

पहुँचाने वाला भी केवल अल्लाह तआला ही है। यदि अल्लाह ने उस घर का हज करने और उन मशायर और स्थानों में ठहरने का आदेश न दिया होता, तो मुसलमान के लए जायज़ नहीं होता क वह हज करे और यह सारी चीजें करे। इसलए की उपासना मनुष्य के अपने वचार और इच्छा के आधार पर नहीं हो सकती, बल्कि कुर्आन करीम में मौजूद अल्लाह तआला के आदेश या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के अनुसार ही हो सकती है। अल्लाह तआला का फ़र्मान हैः

﴿وَلِلَّهِ عَلَى ٱلنَّاسِ حِجُّ ٱلْبَيْتِ مَنِ ٱسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِىٌّ عَنِ ٱلْعَٰلَمِينَ﴾[52]

“अल्लाह तआला ने उन लोगों पर खाना-काबा का हज अनिवार्य कर दिया है, जो वहाँ तक पहुंचने की ताक़त रखते हों। और जो व्यक्ति कुफ़्र करे, तो अल्लाह तआला (उससे बल्कि) सर्व संसार से बेनियाज़ (निस्पृह) है।”

---

[52] सूरह आले-इम्रानः 97

## संक्षेप के साथ ह़ज के कार्यक्रम यह हैं:

1. एहराम (ह़ज्ज में दाखल होने की नीयत करना)।
2. मना में रात बिताना।
3. अरफ़ात में ठहरना।
4. मुज़्दलफ़ा में रात बिताना।
5. कंकरी मारना।
6. क़ुर्बानी का जानवर ज़बह करना।
7. सर के बाल मुंडाना।
8. तवाफ़ (काबा की परिक्रमा करना।)
9. सइ (सफ़ा और मरवा के बीच दौड़ना)
10. मना वापस जाना और वहाँ रात बताना।

## उम्रा के आमाल यह हैं:

 एह़राम (उम्रा में दाखल होने की नियत करना।)

 तवाफ़ करना।

 सइ करना।

 सर के बाल मुंडाना।

एह़राम से ह़लाल होना। (एह़राम खोल देना।)

ऊपर उल्लेख कए गये कार्यकर्मों में से हर एक की अन्य वस्तार, व्याख्या और टिप्पणी है, जिसे आप अल्लाह् की इच्छा से उस समय जान लेंगे जब आप शीघ्र ही ह़ज्ज व उम्रा के मनासक को अदा करने का संकल्प करेंगे।

अन्ततः

इस संदेश के अन्त में, जिसमें हमने इस्लाम की कुछ शक्षाओं, सध्दान्तों, उसके आचरण और कार्यकर्मों के बारे में संक्षप्त परिचय प्रस्तुत कया है, हम आपका इस बात पर शुक्रया अदा कए बिना नहीं रह सकते क आपने हमें यह अवसर प्रदान कया क हम आपके सामने संसार के महानतम धर्म और अन्तिम आसमानी संदेश के बारे में यह संक्षप्त जानकारी पेश कर सकें। आशा है क यह जानकारी इस धर्म को स्वीकार करने और इसकी शक्षाओं और सध्दांतों को मानने के बारे में ठंडे दिल से सोचने  वालों के लए शुभारम्भ सध्द होगी। हम आपको ऐसा मनुष्य

समझते हैं, जो केवल सत्य का इच्छुक और ऐसे धर्म की तलाश में है, जो संतुष्टि और अनुकरण का पात्र हो। इस ईमानी, आत्मिक और मानसक यात्रा के बाद हम आपके बारे में यही सोचते और गुमान करते हैं क आप हर उस वचार, आस्था या उपासना से खुद को अलग कर लेंगे, जो इस धर्म के वरुध्द हो। ताक आप एकेश्वरवाद, प्रकृति और बुध्दि के धर्म, सारे ईश्दूतों के धर्म.... अन्तिम संदेश्वाहक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सन्देश की पैरवी करके लोक तथा परलोक की सफलता और जन्नत से सम्मानित हो सकें। आप इस शुध्द और सच्चे धर्म की ओर लोगों को आमन्त्रण देने वाले बन जाएं; ताक उन्हें संसार के नरक और उसके शोक और चन्ता से मुक्त करा सकें। उन्हें एक बहुत ही भयानक और कठोर चीज़, नरक की आग से नजात दिला सकें। यदि वह इस धर्म पर वश्वास रखे बिना और इस महान रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी कए बिना मर जाते हैं!!

अनुवादक

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)